

Vol. I
No. 7

Tuesday
2nd March, 1954



HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

C O N T E N T S

	PAGES
L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal and Town Committees (Amending) Bill, 1954, introduced	313
Supplementary Demands for Grants	313
Demand No. 6—Legislative Secretariat—Rs. 1,18,000	313-317
Demand No. 5—Industries & Supplies—Rs. 4,98,000	317-318
Demand No. 9—Commutation of Pension Financed from Ordinary Revenues—Rs. 4,29,000	318
Demand No. 14—Appropriation to the Contingent Fund Rs. 1,00,00,000	318-324
Demand No. 8—Territorial and Political pensions—Rs. 13,71,000	324-325
Demand No. 3—General Administration—Rs. 2,08,400	325-346

Note :—*At the beginning of the Speech denotes confirmation not received.

GOVERNMENT PRESS
HYDERABAD
1954

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 2nd March, 1954.

The House Met at Half Past Two of the Clock.

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

Questions and Answers

(SEE PART I)

L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal And Town Committees (Amending) Bill, 1954.

The Minister for Local Government and Education (Shri Gopal Rao Ekbote) : I beg to introduce L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal and Town Committees (Amending) Bill, 1954.

Mr. Speaker : The Bill is introduced.

Supplementary Demands for Grants

*Demand No. 3—Legislative Secretariat—
Rs. 1,13,000*

Shri Gopal Rao Ekbote : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 1,13,000 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved.

Necessity of a Printing Press to the Legislative Assembly

Shri J. Anand Rao (Sirsi-Genral) : I beg to move :

That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1.

Mr. Speaker : Motion moved.

* شری جے۔ آنندراؤ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ جو ترمیم میں نے پیش کی ہے اگرچہ معمولی سی معلوم ہوتی ہے لیکن اس کی حد درجہ اہمیت ہے۔ اسمبلی کی جو کارروائیاں ہوتی ہیں وہ گورنمنٹ پریس میں پرنٹ (Print) کی جاتی ہیں۔ وہاں کام کی کثرت کی وجہ سے کام ہر وقت انجام نہیں پاسکتا جس کی وجہ سے یہ ترمیم ہم کو لائی نئی ہے کہ اسمبلی کے لئے ایک علیحدہ پریس ہونا چاہیئے۔ یہ اسمبلی سپریم باڈی (Supreme Body) ہے۔ یہاں کی کارروائیاں ہر وقت طبع ہونی چاہئیں تاکہ وقت پر ان کی تقسیم عمل میں آسکے۔ گورنمنٹ پریس میں اسٹاف کی کمی کی وجہ سے فینانس ڈپارٹمنٹ نے یہ وعدہ کیا تھا کہ یہاں کے کام کے لئے علیحدہ انتظام کیا جائیگا۔ لیکن اب تک کوئی سپریٹ (Separate) انتظام نہیں کیا گیا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس ترمیم کی معقولیت کے اعتبار سے اس پر کسی کو اعتراض نہیں ہوگا اس لئے میں مودبانہ عرض کروں گا کہ اس کو قبول کیا جائے۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे (अप्यागुडा) : मिस्टर स्पीकर सर, जिस कटौती प्रस्ताव के जरिये जो चीज हाउस के सामने आयी है उसकी तरफ मैंने माननीय सभागृह की तवज्जह जिसके पहले भी दिलायी थी और आनरेबल मिनिस्टर फार कॉमर्स अँड इंडस्ट्रीज ने यह वायदा किया था कि आगिदा रिपोर्ट वगैरा बरबत छपवाकर हाउस को दिये जायेंगे। चुनावे पिछले अक सेशन के पहले सेशन के रिपोर्ट्स मँबरों को मिले हँ, लेकिन हम देखते हैं कि अक साल खतम होने तक अस साल की प्रोसीडिङ (Proceedings) के रिपोर्ट्स मँबरोंको नहीं मिलते हैं तो जो मवाद अस साल में जिस हाउस के सामने आया है उसका अिस्तेमाल करने में या अससे फायदा अुठा ने में मँबरों को दिक्कत महसूस होती है। असलिये यह जरूरी है कि हाउस का काम खतम होने के बाद जितनी जल्द हो सके अुतनी जल्द प्रोसीडिङ की रिपोर्ट्स मँबरों को मिलनी चाहिये। मैं समझता हूँ कि यह अुसी सूरत में मुमकिन होगा जब कि असेंबली के लिये अक अलग प्रेस मुहैया किया किया जाय।

दूसरी बात यह है कि आजकल सिर्फ अंग्रेजी मे ही हमें तमाम मवाद मिलता है, लेकिन हैदराबाद स्टेट जिस तरह का आज है उसमें इसकी जरूरत है कि तेलुगु, मराठी, कानडी और अुर्दू अिन तमाम जबानों में जो भी मँबर की मादरी जबान हो उसमें उसको सब मटीरियल मिलना चाहिये, उसके लिये अिन्तजाम करना जरूरी समझा जाय तो फिर गवर्नमेंट प्रेस के लिये काफी काम बढ़ता और अस हालत में भी असेंबली के लिये अक अलग प्रेस होना में मुनासिब समझता हूँ। अस ष्टि से फायदान्स डिपार्टमेंट जिस पर गौर करे तो ज्यादा मुनासिब होगा। हम से यह कहा गया है कि इसके लिये अक लाख रुपये की जरूरत होगी, लेकिन सप्लीमेंटरी डिमांडिङ के तहत असेंबली प्रिंटिङ के लिये अक लाख रुपये का प्रपोजल हमारे सामने आया है। ऐसी हालत में अक अलग

प्रेस का ही अन्तजाम क्यों न किया जाय यह भी सोचने की बात है। जैसा कि हम देख रहे हैं आज-कल जो अन्तजाम है खासकर आज के गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस के जो आफिसमें अन्तजाम है अनुकी तरफ से बरबत काम पूरा नहीं किया जा रहा है। खासकर जो प्रेस के डायरेक्टर हैं वे इस चीज की तरफ नहीं देख रहे हैं और वह एक नान-टेक्नीकल आय. अ. एस. शख्स है। वास्तव में असेंबली के काम के लिये एक स्पेशल विंग (Special Wing) का अन्तजाम किया जाना चाहिये था। और यहां का काम एक प्रायोरिटी (Priority) के तौर पर बत पर किया जाना चाहिये था। लेकिन हम देखते हैं कि वह नहीं होता है। अंसी हालत में जब यह काम नहीं हो रहा है तो जिम्मेदार अफसरों के खिलाफ डिसिप्लिनरी अक्शन (Disciplinary Action) लिया जाना चाहिये था। इस लिहाज से भी मैं मुनासिब समझता हूं कि इस चीज की तरफ खास तवज्जह देकर एक अलग प्रेस असेंबली के लिये रखा जाय तो ठीक होगा।

मैसर्स اسپیکر - کیا سوالات کے جوابات وغیرہ بھی اب کو نہیں مل رہے ہیں ؟

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—वह भी नहीं मिला है।

मैसर्स اسپیکر - اس کا انتظام کیا گیا تھا کہ سوالات کے جوابات الگ چھپائے جائیں۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—जैसा कोभी अन्तजाम अब तक नहीं हुआ है और न हमको जैसे कोभी सवालान्त भी छपकर मिले हैं।

श्री. बि. के. कोरटकर :—मिस्टर स्पीकर सर, अक्टूबर सेशन तक की पूरी कार्रवाजी छपकर भेजी जा चुकी है। सिर्फ एक सेशन की रह गयी है। यह छप रहा है, मुझे एक चीज की याद आ रही है कि एक शख्स ३१ दिसंबर को सो जाता था और पहली जनवरी को सुबह अठ्ठता था तो कहता था कि मैं सालभर सो गया था, वैसी ही बात है। सिर्फ आखरी सेशन की कार्रवाजी छपने की रह गयी है बाकी सब छपवाकर भेज दी गयी है।

जिस बात पर जोर दिया जा रहा है कि असेंबली के लिये एक प्रेस अलग होना चाहिये। जिसके बारे में मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि यह तहरीक पहले शायद असेंबली से भी आबी थी लेकिन यह चीज प्रैक्टिकल नहीं है। असेंबली का काम सिर्फ चल महीने होता है और चार महीने के बाद प्रेस फिर नहीं चल सकता। जैसे टैमपररी (Temporary) काम के लिये कहीं भी अलग प्रेस नहीं हुआ करता और किसी भी असेंबली में ऐसा अलग प्रेस नहीं है। पिछले वक्त, लैंड सेटलमेंट के वक्त भी तीन दिन में सारा काम छपवाकर देना पडा था। उस वक्त अगर असेंबली का अलग प्रेस होता तो मैं यकीनन कहता हूं कि जो काम तीन दिन में हुआ था वह महीने भर में भी नहीं हो सकता था। क्योंकि इतना बडा प्रेस जोकि आज गवर्नमेंट का है वैसा असेंबली नहीं रख सकती। यह प्रैक्टिकल (Practical) चीज है नहीं। सिर्फ सोचने से बहुत मालूम होता है कि बिघर अड्धर कर के प्रेस रख दिया और यह किया और वह किया तो सब कुछ छप गया। लेकिन काम करने बैठते हैं तो ऐसा नहीं होता। जिनको तज्जुबा है अनुकी भी जरा सुनली जाय तो ठीक होगा।

بھی. بھئی. ڈی. دیشپانڈے:— : کیا اسےंबلی کے لیے آج کے پریس میں آےک سپیشل وینگ بھی نہیں رلآکاتاآسا ?

بھی. بی. کے. کورٹکار:—جیس وکت کام ہوتا ہے اوس وکت سپیشل کام کیا جاتا ہے۔ اوس وکت سپیشل آرڈرس لےکار اےंबلی کے کام کے لیے ڈبل شیفت میں کام کیا جاتا ہے، آوکی آرڈینری (Ordinary) تریکے سے یا آے. جی. کے رولس کے مٹاویک نہیں کیا جا سکتا آسا کام آج کیا جا رھا ہے۔

شری گویال راؤ اکوئے۔ مسٹر اسپیکرس۔ دو تین عذرات کئے جارھے ہیں۔ پہلا عذر یہ ہے کہ اسمبلی کے ڈیپٹس (Debates) نہ وقت پر چھپتے ہیں اور نہ تقسیم ہوتے ہیں۔ لیکن جیسا کہ آنریبل منسٹر نے ابھی فرمایا کہ صرف تھرڈ سیشن (3rd Session) کے ڈیپٹس تقسیم ہونا باقی ہے بقیہ دوسرے سیشن کے مکمل ڈیپٹس تقسیم ہوچکے ہیں۔ دوسرے میٹیریل کی تقسیم کے تعلق سے میں سمجھتا ہوں کہ اب تک کسی کو کوئی اعتراض نہیں ہوا ہے۔ وہ برابر تقسیم ہو رہے ہیں۔ میں یہ مانتا ہوں کہ اسمبلی سپریم باڈی (Supreme Body) ہے۔ اس کا لٹریچر ہر وقت طبع و تقسیم ہونا چاہیئے۔ سوال یہ ہے کہ کیا علحدہ پریس کے ذریعہ اس مسئلہ کو حل کیا جائے یا موجودہ پریس کے ذریعہ اس مقصد کو حاصل کیا جائے۔ اس سلسلہ میں دو پروپوزلس (Proposals) آئے ہیں۔ ایک یہ ہے کہ موجودہ پریس میں ایک علحدہ ونگ (Wing) کھولا جائے جو اسمبلی کے کام کو انجام دے سکے۔ اور دوسرا آلٹرنیٹیو (Alternative) یہ ہے کہ موجودہ پریس میں ہی ڈبل شفٹ سسٹم کے ذریعہ کام کی رفتار کو تیز کیا جائے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اگر آنریبل ممبرس واقعات سے واقف ہوتے تو ایسے سوچھاؤکی ضرورت پیش نہ آتی۔ بات یہ ہے کہ پہلے سے ایک ونگ (Wing) علحدہ قائم کیا گیا ہے۔ وہ ڈبل شفٹ (Double Shift) میں کام کر رھا ہے۔ کام کی تکمیل تیزی سے ہو رہی ہے۔ چنانچہ تھرڈ سیشن کے ڈیپٹس کے سوا باقی تمام ڈیپٹس تقسیم ہوچکے ہیں۔ موجودہ پریس میں ایک علحدہ ونگ قائم کیا گیا ہے جو ٹوششس (Two Shifts) میں کام کر رھا ہے۔ اس کام کی طرف پوری توجہ کی جا رہی ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اب کسی قسم کی شکایت کا موقع نہیں رہے گا۔ علحدہ پریس کے قیام کے بارے میں سرسری طور پر دیکھنے میں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ یہ بہت آسان بات ہے۔ لیکن اس مسئلہ پر غور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہ ناممکن سی بات ہے۔ حکومت کے پاس خرد لیجسلیٹیو اسمبلی سے تحریک آئی تھی۔ مختلف آلٹرنیٹیوز (Alternatives) پر غور کیا گیا اور اکسپرٹس (Experts) سے اس کی جانچ کرائی گئی۔ ان کی رائے یہ ہوئی کہ محض اسمبلی کے لئے ایک علحدہ پریس قائم کیا جائے تو کچھ پرافٹیبیل (Profitable) نہیں ہوگا۔ لیگل ڈپارٹمنٹ اور لیجسلیٹیو اسمبلی دونوں سکریٹریٹس کا کام اس علحدہ مطبع سے لیا جائے تو اس میں شک نہیں کہ

کام کافی ہوگا لیکن یہ بنی پرافٹیل نہیں ثابت ہوگا۔ ایک بل پہلے لیگل سکریٹریٹ سے چبھا ہے اور پھر لیجسلیٹیو اسمبلی سے چھینا ہے۔ پہلے یہ سمجھا گیا تھا کہ اس کام کے لئے دونوں کو کوآرڈینیٹ (Coordinate) کر کے ایک جگہ چھاپنے کا انتظام کیا جائے تو سہولت ہوگی۔ اس پر بھی غور کیا گیا کہ پانچ چھ لاکھ روپیہ کے سرمایہ سے ایک علیحدہ پریس اسمبلی کے لئے قائم کیا جائے۔ اس بارے میں اکسپرس سے جانچ کرائی گئی۔ اندازہ کیا گیا ہے کہ اس پر چھ لاکھ روپیہ خرچ ہوں گے اور ریکرننگ اکسپنسز (Recurring expenses) کے لئے ایک لاکھ ۱۷ ہزار روپیہ صرف ہوں گے۔ آنریبل ممبرس مجھ سے متفق ہوں گے کہ پیسوں کے خرچ کے لحاظ سے یہ معاملہ کچھ پرافٹیل نہیں ہوگا البتہ تیز رفتاری کا جو سوال ہے اس کا انتظام تو دوسرے طریقے سے ہم نے کیا ہی ہے۔ وہاں جس مقدار میں سنری ہے اس کے لحاظ سے جس حد تک ایفیشینسی (Efficiency) بڑھ سکتی ہے اس کو بڑھانے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ مجھے امید ہے کہ آئندہ اس پر کسی کو اعتراض کا موقع نہیں ملیگا۔

شری جے۔ آنندراؤ۔ مسٹراسپیکر سر۔ چونکہ منسٹر صاحب متعلقہ نے یقین دلایا ہے اس لئے میں اپنا کٹ موشن وٹھ ڈرا کرتا ہوں۔

I beg leave of the house to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the house, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 1,13,000 under demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 5—Industries & Supplies Rs. 4,98,000.

The Minister for finance, statistics, Customs, Commerce & Industries (Shri V. K. Koratkar) : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 4,98,000 under demand No. 5 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved.

*Demand No. 9—Commutation of Pensions
Financed from Ordinary Revenues—Rs. 4,29,000.*

Shri V. K. Koratkar : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 4,29,000 under demand No. 9 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved.

*Demand No. 14—Appropriation to the Contingency
Fund—Rs. 1,00,00,000.*

Shri V. K. Koratkar : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 1,00,00,000 under demand No. 14 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved.

*Failure of Government to take measures against
closure of Industries*

Shri V. D. Deshpande : I beg to move :

“That the grant under demand No. 5 be reduced by Re. 1.”

Mr. Speaker : Motion moved.

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—

मिस्टर स्पीकर सर, मैंने जिस सिलसिले में कटमोशन रखा है वह सनअंतों के बंद होने के मुतालुक है। कल हायुस के सामने आनरेबल मिनिस्टर फार फायनान्स ने जो तकरीर फरमाजी उसमें यह अुम्मीद दिलाजी कि अेकाध दूसरा कारखाना बंद हो रहा है, आम तौर पर मआशी हालत अच्छी है, सनतों की तरक्की हो रही है, प्रोडक्शन बढ़ रहा है और कोजी अलार्मिंग सिचुयूअेशन (Alarming situation) नहीं है। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि अुन्होंने कहा कि कोजी काम्प्लीसेंट अेटीट्यूड (Complacent Attitude) इकुमत की नहीं है लेकिन मैंने तो कम से कम अुनकी तकरीर काम्प्लीसेंट (Complacent) पाजी। जिस चीज को हायुस के सामने चार महीने से रखा जा

रहा है कि सिकंदराबाद में जो पुरानी मिल के नाम से अक मिल मशहूर है वहां के १८०० मजदूर बेरोजगार होनेवाले हैं। वहां के मजदूरों की तरफ से अक पिटीशन भी हुकूमत के सामने रखी गयी थी। जब कि मिल बंद होने के अमकानात थे और अुसके बाद जब मिल बंद हो गयी तब भी अक पिटीशन रखी गयी। मिनिस्टर फार कामर्स अंड अिडस्ट्रीज के पास वहां के मजदूरों की तरफ से अक डेप्यूटेशन (Deputation) भी भेजा गया और अुनसे बातचीत भी की गयी। मै खुद अुस वक्त्त वहां हाजिर था। चीफ मिनिस्टर साहब से भी हम मिले थे और अुन्होंने यह यकीन दिलाया था कि मै मिल के मेनेजिंग अेजंट को बुला रहा हूं और मै यह कोशिश कर्ंगा कि अिस मिल को चालू रखा जाय। अिन तमाम कोशिशों के बावजूद यह मिल अब बंद है। अिसके बाद जो हालत हुअी अुसको मै मुक्त्तसरन हाअुस के सामने रखना चाहता हूं।

अिस मिल की जानिब से कोर्ट से यह मांग की गयी थी कि चूकि हम अिस मिल को चला नहीं सकते लिहाजा हमको मिल बंद करने का हुक्म दिया जाय। अदालत ने अुनके अुजरात को सुनकर यह हुक्म दिया कि जो रीजन्स (Reasons) अदालत के सामने पेश किये ह अुनको देखकर मिल को बंद नहीं किया जा सकता। अुसके बाद फिर अिस मिल की तरफ से हुकूमत को नोटीस दी गयी कि हमारे पास माल नहीं है अिसलिये हम बंद कर रहे हैं। हुकूमत हैदराबाद की तरफ से मिल की मेनेजमेंट को नोटीस दिया गया कि अिडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स अेक्ट के तहत अपने जो अुजरात पेश किये हैं वे ठीक नहीं मालूम होते। अिसलिये हम हुक्म देते हैं कि मिल बंद न की जाय, लेकिन मिल के मालिकोंने अुसको भी नहीं माना। अिसके बाद यह मिल का क्लोजर (Closure) है या लाक आउट (Lock-out) है अिस चीज का तसकीया करवाने के लिये अिस मामले को हुकूमत की तरफ से अिडस्ट्रियल ट्रिब्यूनल (Industrial Tribunal) के पास भी भेजा गया। चूकि यह फैसला होना था अिसलिये करीब अक महीने से आज तक अुन मजदूरों को हाफ पे (Half-pay) या अलाअुन्स (Allowance) मिला करता था, लेकिन आज या कल से वह भी बंद होनेवाला है और शायद कल या परसों से अुन तमाम मजदूरों को भूख का मुकाबला करना पड़ेगा। यह हुकूमत के सामने अक बहुत बड़ा सवाल है, कि अिस मसले को कैसे हल किया जाय। अगर दिन ब दिन अिस तरह से कारखाने बंद होते चले जायेंगे और अुनके लिये अगर हुकूमत कोअी ठीक रास्ता न निकाले तो मै समझने से कासीर हूं कि किस तरह से बढ़ते हुअे बेरोजगारी के सवाल को हल किया जा सकता है। हमारे सामने बार बार कहा जाता है कि यह कल्याणकारी स्टेट है और मै भी चाह रहा हूं कि यह कल्याणकारी स्टेट बने, लेकिन वह कल्याण-किन् बर्गोंका होगा यह हमारे सामने सवाल है। क्या वह कल्याणकारी राज्य अभी चीफ मिनिस्टर साहब जिनके बारे में कह रहेअे अुनका होगा या मेहनतकश अुव्वाम किसान और मजदूर का होगा? अिस लिहाज से हम महसूस कर रहे हैं कि आज की हुकूमत की सनअती पालिसी अिस तरह की है अुसी पर वह चलती जाय तो बेरोजगारी बढ़नेवाली है, वह कम होनेवाली नहीं है। यह भी हाअुस के सामने हुकूमत की तरफ से रखा जाता है कि हम मजबूर हैं, कारखाने चला नहीं सकते और हमको हक भी नहीं है कि हम अुनको मजबूर कर सकें, लेकिन मै यह कहना चाहता हूं कि हुक्मते हिंद ने जो अभी कानून पास किया है कि अगर मिस मेनेजमेंट (Mismanagement)

की वजह से कोअी कारखाना बंद होता है तो हुकूमत उसको अपने कब्जे में लेकर चला सकती है। तो जिस मिल में भी उस तरह का कोअी मिसमेनेजमेंट बगैरा हुआ है या नहीं इसको भी हुकूमत को देखना चाहिये और जरूरी होगा तो उसको अपने कब्जे में लेकर चलाना चाहिये। हमारा तो यह भी कहना है कि अगर अदालत भी कहती है कि यह कारखाना नहीं चल सकता तो भी उसको चलाना हुकूमत के लिये लाजमी हो जाता है, क्योंकि अगर बारिश नहीं हुअी, तो फसल नहीं होती, अपूर से खुदा का हुक्म आता है कि कि फलां अेरिया के अंदर बारिश नहीं आयेगी, फसल पैदा नही होगी, अनाज नही होगा, और लोग नहीं खायेंगे तो मर जायेंगे और कहत होगा और लोग भूखे रहेंगे या मर जायेंगे। कल अगर बीड डिस्ट्रिक्ट के अंदर फसल नही हुअी लिहाजा लोग भूखे मर जायें क्या अैसा हुकूमत करती है। लेकिन उस वक्त कोअी भूतदयावादी भी कहता है कि नहीं, अनुको अनाज देना चाहिये क्योंकि वहां कुछ पैदा नहीं हुआ है। ~~मुझे~~ ~~यह~~ से जब किसी कारखाने को नहीं चलाया जा रहा है तो क्या जिस मिल के हजारों लोगों को बेरोजगार रखेंगे और कारखाने को हम नहीं चलायेंगे? अगर अदालत का भी फैसला है कि मशीनरी पुरानी है इसलिये उसको बंद किया जा सकता है तो क्या अेक वेलफेअर स्टेटका यह फर्ज नहीं होता कि वह उस कारखाने को चलाये? जरूरत हुअी तो हुकूमत को अेक कानून बनाना पडेगा या और कोअी तरीका अिस्तेमाल करना पडेगा जिससे वह कारखाना चल सके। जिस कारखाने को चलाना कोअी मुश्किल बात नहीं है। मैं समझता हूं कि करीब करीब ५ लाख रुपयों में ही मालिक ने जिस मिल को कदीम जमाने में खरीदा था। जहां तक मैंने सुना है, आज हुकूमत भी दस लाख रुपये मशीनरी लाने के लिये देने को तैयार है। अैसी हालत में मजदूरों की तरफ से मैं यह कहना चाहता हूं कि जरूरत पडी तो मजदूर अपने प्राविडेंट फंड (Provident fund) का पैसा या दीगर फैसिलिटीज (Facilities) जिसमें अिनव्हेस्ट (Invest) करने के लिये तैयार हैं ताकि सरमाये के तौर पर वह मिल में लगाया जा सके और मिल भी चालू रहे। जिससे ज्यादा तो वह कुछ नहीं कर सकते। जिस तरह से हुकूमत का कर्ज मजदूरों के प्राविडेंट फंड के पैसेसे कुछ रनिंग कैपिटल (Running capital) के तौर पर अिमदाद दी जाती है तो आज की यह मिल चलाना मुश्किल नहीं है। मैं हुकूमत से कहूंगा कि अेक टेस्ट (Test) केस (Case) की तरह यह कारखाने का सवाल हमारे सामने आया है और अगर हम समझते हैं कि बेरोजगारी का सवाल हम हल करने जा रहे हैं तो जिस वक्त हुकूमत को कदम अूठाना जरूरी हो गया है और जिसी सिलसिले में मेरा यह कटमोशन है। जब मैंने जिस पर अेक अेडजर्नमेंट मोशन (Adjournment motion) पेश किया था तो उस वक्त स्पीकर साहब ने कहा था कि यह मसला आप डिमांड के वक्त हाउस के सामने रख सकते हैं। जिसलिये मैं हुकूमत के सामने रख रहा हूं कि अिन लोगों के मुख का सवाल कल से हमारे सामने पेश हो रहा है। जिस वक्त आरजी तौर पर कोअी काम किया जा सकता है तो उस पर हुकूमत को सौचना चाहिये। मुझे यह बताया गया है कि अर्वन अनअेम्प्लायमेंट (Urban unemployment) नाम का कोअी फंड हुकूमत के पास है और उसमें से अनअेम्प्लाइड (Unemployed) लोगों को अिमदाद दी जा सकती है। मैं यह भी कहूंगा कि अगर इसके लिये हुकूमत हिंद के राजामंदी की जरूरत हो तो फौरन अनुके साथ बातचीत की जाय और जिस फंड से लोगों को अिमदाद दी जाय।

नीमरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि अभी इंडस्ट्रियल कोर्ट के सामने जिस मामले के बारे में कार्यवाही चल रही है। जब तक वह खतम नहीं होता तब तक उनको अल्पावृत्त या हाफ पे (Half pay) जिस तरह से गुजिस्ता अंक महीने तक दिया जाता था उसी तरह से दिया जाना चाहिये। दूसरा अंक सुझाव मैं रखना चाहता हूँ कि सप्लाय डिपार्टमेंट की तरफ से या दीगर किसी तरीके से चीफ ग्रेन शाप्स जिन लोगों के लिये खोले जायें ताकी कम किमत में जिन लोगों को अनाज मिल सके जिस तरह हम अपने कुनवे के बारे में सोचते हैं हमारे भाई, बहन या बच्चे भूखे हों तो उनका करना हम जरूरी समझते हैं उसी तरह से जिन १८०० लोगों के बारे में सोचा जाय और यही तरीका जिन्टजाम किसी भी कल्याणकारी स्टेट के लिये ठीक हो सकता है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब को तो उन जागीरदारों की हमेशा फिक्र होती है कि अगर उनका काम्पेन्सेशन (Compensation) बंद किया जाय तो वे भूखे रहेंगे, रास्ते पर अंधर अंधर धूमना शुरू करेंगे। वे तो सिर्फ १२०० ही लोग हैं। यहां तो १८०० लोगों का सवाल है। जागीरदार तो ऐसे लोग हैं जिनके पास करोड़ों रुपया है, जमीन और जायदाद है, शेअर्स हैं, कहीं पुस्तों से पैसा जमा हुआ है, उनके बारे में हुकूमत को अितनी फिक्र है तो क्या जिन लोगों के पास घर नहीं है, पैसा जमा नहीं है, उन को तनख्वाह भी अितनी नहीं मिलती कि वे पीछे कुछ रख सकें उनके बारे में क्या हुकूमत को कुछ नहीं सोचना चाहिये? ऐसे लोगों की तो हुकूमत पर ज्यादा जिम्मेदारी आकर पडती है। मैं हुकूमत से अपील (Appeal) करूंगा और मैं हाउस के सामने जिस चीज को रखना चाहता हूँ की यह अंक कान्क्रीट (Concrete) मसला आज हमारे सामने आया है। फायनान्स मिनिस्टर साहब के बजट के स्टेटमेंट में और राजप्रमुख के अड्रेस में बड़े जोर से कहा गया है कि बेरोजगारी का सवाल कम हो रहा है लेकिन सिर्फ ऐसा कहने से यह सवाल हल होनेवाला नहीं है। जिन १८०० लोगों का सवाल आप किस तरह से हल करते हैं उसको देखकर हम यह तय कर सकेंगे कि जिस बेरोजगारी के आम सवाल को आप किस तरह से हल करनेवाले हैं, लेकिन हुकूमत की जो सनअतों के बारे में आज पालिसी है उसको देखकर हमें डर लगता है की बेरोजगारी और बढ़नेवाली है। जिस स्टेट में दिन ब दिन कारखाने किस तरह से बंद होते जानेवाले हैं उसके बारे में मैं आज नहीं कहना चाहता, बजट के वक्त मैं उस पर कहूंगा, लेकिन अगर अगले तीन चार दिनों में आप जिस मसले को हल कर सकेंगे तो मुमकिन है कि हमारे आज के ख्यालात कल बदल सकेंगे और हम भी सोचन लेंगे कि सचमुच आज की हुकूमत जिस सवाल को हल करना चाहती है और हुकूमत ने अंक कान्क्रीट (Concrete) स्टेप (Step) जिस बेरोजगारी के सवाल को हल करने में लिया है।

श्री. वि. के. कोरटकर :—मिस्टर स्पीकर सर, जिस मद में यह मांग की गयी थी उसका कोअी ताल्लूक जनरल इंडस्ट्रीज (General Industries) या हैदराबाद स्पीनिंग या वीविंग मिल से नहीं था। मांग यह की गयी थी कि अंक रक्कम जो शेअर्स (Shares) के तौर पर अफ. आय. सी. को दी गयी थी और अब तक जिसका अडवान्स (Advance) के तौर पर खर्च पडा है उसके बारे में अकौंटेंट जनरल ने अंतराज किया है कि उसको उस में न रखकर कैपिटल अकौंट (Capital Account) में रखा जाय। जिसलिये अंक हेड (Head) से निकाल कर दूसरे हेड में डालने का यह सवाल है।

जिसमें हैदराबाद स्पीनिंग और वीविंग मिल का कोअी सवाल नहीं था। बहरहाल सवाल पैद

किया गया तो उसके बारे में जो कुछ गलतफहमियां हुई हैं उनको दूर करना मेरे लिये जरूरी है। बात यह है कि वेलफेअर स्टेट (Welfare State) हो या गैरवेलफेअर स्टेट हो य कोअी और हो, अक आदमी पैदा हुआ तो अक न अक दिन वह जरूर मरनेवाला है यह तो मानी हुई चीज है।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—लेकिन वह नये लोग भी पैदा करता है।

श्री. बि. के. कोरटकर :—आदमी मरने की हालत में आ गया और उस वक्त डॉक्टर को बुलाकर बहुत से अजिक्शन्स देने के बाद भी वह नहीं बचा तो वह डॉक्टर नहीं है यह तो नहीं कह सकते। उस डॉक्टरने दुनिया में कितनों को बचाया है इसको भी देखना पड़ता है।

यह चीज तो मैंने अपने फायनान्स मिनिस्टरकी हैसियतसे बजट स्पीच में और दूसरे भी बहुत से मौकों पर बतलायी है कि इस वक्त जब कि हालत बहुत खराब है तो भी हमारी जिडस्ट्रीज में प्रोडक्शन ज्यादा हो रहा है। मैंने आंकड़े भी बतलाये थे और अिन टेक्सटाइल जिडस्ट्रीज के हद तक भी मैं समझता हूं कि अपोजीशन के लीडर और दीगर लोग बुतने ही अखबारात पढते होंगे जितने की और लोग पढते हैं। अुन्होंने देखा होगा कि इस वक्त अैसा स्लम्प (Slump) आया था जिसमें अहमदाबाद, जिंदोर और कानपूर की बहुत सी टेक्सटाइल मिल्स बंद हुई। जो मीलें अच्छी तरह से चलती थीं उनको भी बंद होना पड़ा। और यहां तो अक ही मिल बंद हुई है जिसके बारे में अेक्सपर्ट्स की राय कायम हो चुकी है कि यह मिल अब नहीं चल सकती।

अभी यह कहा गया कि गवर्नमेंट के पास अक अच्छा कानून है कि उसके तहत अगर कोअी मसमेनेजमेंट हो रहा है तो उस मिल के अिन्तजाम को अपने हाथ में लेकर हुकुमत चाहे तो चला सकती है। कहांतक यह कदम सही होगा जिसमें शक है अभी अक मिल के बारे में गवर्नमेंट ऑफ अिडिया ने अैसा किया तो बदकिस्मती से सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) से उसके खिलाफ फैसला दे दिया। सोलापूर मिल का वाक्या आपके सामने है। लेकिन जिसका मतलब यह नहीं है कि जिडस्ट्रीज डिपार्टमेंट ने या लेबर डिपार्टमेंट ने जिसकी तरफ ख्याल नहीं किया।

जिस चीज को आप बतला रहे हैं उसे करने की कोशिश हमने भी की। गव्हर्नमेंट ऑफ अिडिया के पास यह सवाल पेश किया गया। अुनके सामने हमारे हालात और इस मिल के हालात रखे गये अुनसे यह भी कहा गया कि यह मिल यदि आप खुद अपने हाथ में लेकर चलायें तो अच्छा होगा गव्हर्नमेंट ऑफ अिडिया ने अपने अेक्सपर्ट को भेज कर इस मिल का अिन्स्पेक्शन (Inspection) भी कराया। अुनकी रिपोर्ट भी हमारे पास आगयी है। अुन्होंने कहा है कि यह मिल बहुत पुरानी होगयी है। हमारे यहां भी यह मिल पुरानी मिल के नामसे ही पहचानी जाती है। पुरानी मिल अब नये मिल की तरह कैसे चल सकती है? जिस मिल का वीविंग सेक्शन (Weaving Section) बहुत खराब होगया है।

यह समझना चाहिये कि अक मिल जो पुरानी होगयी वह नयी मिल की तरह काम नहीं दे सकती है। पुरानी मिल भी नयी मिल की तरह चलायी जाय अैसा ख्याल करना ही गलत है। दुनिया म नयी नयी मिलें निकलती हैं चलती हैं बढ़ती, पुरानी मिलें बंद होकर हैं अुनकी जगह नयी मिलें लेती हैं। यह पुरानी मिल को देखकर यह कहा जाता है कि जिसमें यह नहीं हो रहा है, वह नहीं किया जा रहा है। अैसा कहना कहांतक ठीक है?.

जो काम सरकार की तरफ से अच्छी तरह किया जा रहा है उसके बारे में तो कुछ नहीं कहा जाता है। हमारे यहां की जो सिमेंट फैक्टरी है उसको अच्छी तरह फायदेमें चलाने के लिये हमारी सरकार किननी कोशिश कर रही है। हैदराबाद स्टेट को वेलफेअर स्टेट (Welfare State) बनाने के लिये यहां की सरकार किननी कोशिश कर रही है। कोअी सरकार वेलफेअर स्टेट बनाने की कोशिश न करे ऐसा नहीं हो सकता है।

हमारे सामने सवाल यह है कि जो लेबरर्स बेकार रहेंगे उनको कुछ न कुछ काम तो जरूर देना चाहिये। उनको काम देने की जरूरत है यह बात तो गव्हर्नमेंट मंजूर करती है। लेकिन उनको विविग का ही काम दिया जाय यह बात गव्हर्नमेंट नहीं मान सकती है। अमके मिलसिले में जो डेप्युटेशन आया था उसका यह कहना था कि अिन लोगोंको वही काम दिया जाय जो आज तक वे कर रहे हैं। लेकिन गव्हर्नमेंट को यह मुमकिन नहीं है। दूसरी जगहों पर काम देने के बारे में गव्हर्नमेंट सोच रही है। जैसे की तुंगभद्रा प्रॉजेक्ट में काम हो रहा है, वहां पर अिन लोगों को काम दिया जा सकता है यह भी कहा गया कि आज तक जो लोग विविग का काम कर रहे थे वे आज अेकदम जमीन खुदाओ का काम कैसे कर सकते ह ? यह बात तो गव्हर्नमेंट भी मानती है। लेकिन गव्हर्नमेंट पर यही प्रेस (Press) किया जाय की जो काम पहले अुन लोगों से लिया जाता था वैसा ही काम अुन्हे दिया जाना चाहिये, हम विविग ही करेंगे, जिस जगह पर हम पहले खडे होते थे वही काम हमें मिलना चाहिये, तो यह नहीं हो सकता है। दूसरी जगह अेप्लॉयमेंट देने का प्रपोजल गव्हर्नमेंट ने अुनके सामने रखा है। हम समझते हैं कि यह सवाल तभी हल होगा जब कि लोग दूसरे काम करने के लिये भी तैयार होंगे।

मुझपर आक्षेप किया गया कि मैंने अपनी फायनान्सकी स्पीचमें कहा था कि बेकारी दूर होरही है जबकि अेक तरफ मिलें बेद हो रही हैं उसके कारण १८०० मजदूर बेकार हो रहे हैं।

अभी हमारे यहां अन अेप्लॉयमेंट खतम हो रहा है ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा। अन अेप्लॉयमेंट तो बढ रहा है। लेकिन उसको रोकने की हम काफी कोशिश कर रहे हैं। और हम भी चाहते हैं कि जिसको रोका जाना चाहिये। मैंने बतलाया था कि अन अेप्लॉयमेंट रजिस्टर्स में जितने लोग दर्ज किये गये थे अुनमें से काफी तादाद में रिप्लेसमेंट (Replacement) किया गया है ऑल्टरनेटिव्ह अेप्लॉयमेंट (Alternative employment) देने के लिये अितजाम किया जा सकता है। यह मैंने पहले ही कहा है। और हुकूमत जिस बात की कोशिश कर रही है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को अेप्लायमेंट दिया जा सके।

अेक मेंबर ने यह चीज रखी की गव्हर्नमेंट के पास अेक अरबन अनअेप्लॉयमेंट फंड (Urban unemployment fund) है। मुझे तो जिसके बारे में मालूमात नहीं कि आया ऐसा कोअी फंड है या नहीं। लेकिन अगर ऐसा फंड है तो उसके बारे में मैं जरूर कोशिश करूंगा और अितसे यदि मदद हो सकती है तो जरूर दूंगा।

आखिर में मैं अितनाही कहना चाहता हूं कि यहां जो सप्लिमेंट्री डिमांड (Supplementary Demand) पेश की गयी है उससे जिस बहस का संबंध नहीं है, जिस लिये जिस मांग के बारे में कोअी खास अंजुर नहीं होना चाहिये।

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 4,93,000 under Demand No. 5 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The Motion was adopted.

Mr. Speaker : The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 4,29,000 under Demand No. 9 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The Motion was adopted.

Mr. Speaker : The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 1,00,00,000 under Demand No. 14 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The Motion was adopted.

*Demand No. 8 Territorial and Political
Pensions Rs. 12,71,000*

The Chief Minister (Shri B. Ramakrishna Rao) : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 12,71,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved :

Demand No. 3 — 25 G.A.D.—2,03,400

Shri B. Ramakrishna Rao : I beg to move :

“That a further sum not exceeding Rs. 2,03,400 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved :

Delay in abolishing cash grants

Shri A. Lakshmi Narasimha Reddy (Wardannapet) : I beg to move :

“That the grant under Demand No. 8 be reduced by Re. 1.”

Mr. Speaker : Motion moved.

* شری ایل - این ریڈی - اسپیکر سر - کیاش گرانٹس (Cash grants) کے سلسلہ میں میں ہاؤز کی توجہ مبذول کرانا چاہتا ہوں - اسلئے کہ ایک عرصہ سے ہاؤز کا اصرار رہا ہے اور خاص طور پر اپوزیشن کی جانب سے کہ کیاش گرانٹس کو ابالش (Abolish) کرنے میں عجلت کی جائے - حکومت کی جانب سے بھی بار بار یہ امید دلائی گئی ہے کہ کیاش گرانٹس ابالش کئے جائینگے - لیکن اسکے باوجود کیاش گرانٹس اب تک ابالش نہیں ہوئے ہیں جسکی وجہ سے ہمارے فنانس پر کافی بار پڑ رہا ہے - اس سال بھی ہم دیکھتے ہیں کہ اس کا پراویژن بجٹ میں ہے - ہم تو یہ سمجھ رہے تھے کہ گذشتہ سال ہی اسکو ابالش کیا جائیگا مگر ایسا نہیں ہوا اور اس سائل کے بجٹ میں بھی اسکو پرووائیڈ (Provide) کیا گیا ہے - میں حکومت کو توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ جب آپ رسوم داروں کے رسوم ابالش کئے ہیں اور ایک آرڈر کے ذریعہ اسے بھی بند کرسکتے ہیں تو کیاش گرانٹس کو بند کرنے میں تاخیر کی کوئی وجہ نہ ہونی چاہئے - مجھے یہی چیز ہاؤز کی توجہ میں لانا تھا -

شری بی - رام کشن راؤ - مسٹر اسپیکر سر - ٹریسوریر اینڈ پولیٹیکل پنشنس (Territorial & Political Pensions) کی مد کے تحت ۱۲ لاکھ ۷۰ ہزار کا گرانٹ ہے اسکو نسبت انریبل ممبر نے یہ کٹ موشن پیش فرمایا ہے - اس سلسلہ میں انہوں نے جو کچھ فرمایا وہ یہی کہ کئی مرتبہ حکومت نے ان کیاش گرانٹس کو ابالش (Abolish) کرنے کا وعدہ کیا لیکن اب تک اس وعدہ کو پورا نہیں کیا - اس وجہ سے انریبل ممبر نے کٹ موشن پیش کیا ہے - غالباً انریبل ممبر کا مقصد یہ ہے کہ اس

مسئلہ پر حکومت نے اب تک کیا کیا اور کیا کرنا چاہتی ہے اسکو صراحتاً ظاہر کیا جائے۔ میں ہاؤز کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ گزشتہ سال یہ سمجھا گیا تھا کہ کیاش گرانٹ ابالشن ایکٹ کے پاس ہو جانے کے بعد محض اسکو شیڈول میں درج کر کے منصبوں اور ان تمام چیزوں کو مسدود کیا جاسکتا ہے۔ اس وقت جو کچھ ہماری معلومات منصبوں وغیرہ کے بارے میں تھیں ان پر ہماری یہ رائے مبنی تھی۔ اس سلسلہ میں سب سے پہلے جو وار پڑا وہ دیشمکھوں اور دیشپانڈوں کے رسوم پر پڑا۔ اور اسکے بارے میں چونکہ حکومت کے کچھ کلر نوٹس (Clear Notions) تھے۔ وہ رسوم ریونیو میں کچھ ڈیوٹیز انجام دینے کے سلسلہ میں تھے اور اب وہ بالکل ہی سینیکیور گرانٹس (Sinecure grants) ہو گئے تھے۔ انکو تو بہت آسانی سے مسدود کیا جاسکتا ہے۔ چنانچہ شیڈول میں انکو درج کر دیا گیا اور بعض گرانٹس کے بارے میں کیونکہ حکومت کو بھی تفصیل کے ساتھ اسکا علم نہ تھا کہ ہر گرانٹ کے بارے میں کیا کرنا چاہئے اس وجہ سے یہ جھوڑے دئے گئے ہیں تاکہ شیڈول میں کس قسم کے کیاش گرانٹس کو درج کر کے اس ایکٹ کو امپلیمنٹ (Implement) کیا جائے۔ لیکن بعد میں امپلیمینٹیشن کے وقت شیڈول میں درج کرنے کے سلسلہ میں غالباً آئریبل ممبر کو علم نہیں ہے چنانچہ انہوں نے کٹ موشن پیش کیا ہے۔

واقعہ یہ ہے کہ ہم نے رسوم کو بند کر دیا ہے۔ اسکے بارے میں ہائیکورٹ میں رٹ (Writ) پیش ہوا ہے اور کیاش گرانٹ ابالشن کے سلسلہ میں مقدمہ چل رہا ہے۔ دوسری چیز یہ ہے کہ حکومت کو یہ بھی جاننے کی ضرورت تھی کہ جو گرانٹس منصبوں اور یومیوں وغیرہ کے روپ میں ہیں وہ کس نوعیت کے ہیں۔ انکے گرانٹس کن شرائط کے تحت ہیں۔ آیا انکو بلا معاوضہ یا معاوضہ کے ساتھ ختم کیا جاسکتا ہے۔ چنانچہ اسکی جانچ کرنے کے لئے حکومت نے ایک کمیٹی مقرر کی ہے تاکہ وہ اسے منصبوں اور یومیوں کی ہسٹری کی اسٹڈی (Study) کر کے منصبداروں کی کمیٹی اور انکی اموسیشن کے ریپریزنٹٹیوز (Representatives) سے گفتگو کر کے کچھ مواد بھی جمع کیا ہے اور اسکی اسٹڈی کرنے کے بعد اب حکومت ایک نتیجہ پر پہنچ چکی ہے۔ حکومت اسے کس شکل میں نافذ کرنا چاہتی ہے۔ میں آج بیان کرنے سے قاصر ہوں۔ میں انکو ہفتہ عشرہ میں بیان کرونگا جبکہ حکومت عنقریب کیاش گرانٹس ابالشن امینڈمنٹ بل پیش کریگی۔ اس وقت میں یہ تفصیلات عرض کرنا نہیں چاہتا۔ فی الحال اس کٹ موشن کے سلسلہ میں آج اتنا ہی عرض کرنا چاہتا ہوں کہ یہ پورا مسئلہ ہمارے زیر غور رہا اور اس میں عجلت نہیں ہونی چاہی کہ عجلت آئریبل ممبرس چاہتے ہیں۔ اسکی وجہ صرف یہ ہے کہ اس قسم کے معاملات میں حکومت کی یہ پالیسی ہے کہ وہ پورے طریقہ پر اسکے نتیجوں پر، اسکے بیاک گروٹ، پس منظر اور آنے والے نتائج پر غور کرنے کے بعد اقدام کرے۔ اس میں حکومت کی پالیسی عجلت کی نہیں ہے۔ آج ہم ہر چیز کو ختم کر رہے ہیں۔ جاگیرات ابالشن

کر رہے ہیں۔ مناصب ابالشی کر رہے ہیں۔ کیاش گرانٹس ابالشی کر رہے ہیں تو اسکی نسبت ہر قسم کے معلومات ہمیں ہونا چاہئے۔ جو وسڈ رائٹس (Vested rights) ہیں انکو ابالشی کرنے کا اقدام کر رہے ہیں تو اس قسم کا اقدام کرتے وقت جو حکومت کی پالیسی ہونی چاہئے وہ عجلت کی نہ ہونی چاہئے۔ وہ ایسی ہونی چاہئے کہ اس میں ناجائز طور پر دیر نہو اور ساتھ ساتھ اس مسئلہ کے ہر پہلو پر بھی غور کر لیا جائے۔ حکومت یہ بنی غور کر رہی ہے کہ ابالیشن کی زد میں آنے والے لوگوں پر کیا اثر پڑنے والا ہے۔ ان ہی امور کو پیش نظر رکھتے ہوئے حکومت کام کر رہی ہے۔ ایک طرف تو اس سارے ایکٹ کو جو منظور کیا گیا کورٹ میں چیلنج کیا گیا ہے اس کا تصفیہ ہونا ہے۔ دوسری طرف مناصب کو بند کر دینے کے کیا معاشی نتائج ہونگے اون پر بھی غور کرنا ہوگا۔ کیونکہ اسکی وجہ سے (۸) ہزار اشخاص جن میں بوڑھے، بچے اور بیوائیں ہیں متاثر ہو جائینگے۔ میں یہ بھی کہہ دینا چاہتا ہوں (گو اسکی ضرورت نہیں ہے) کہ ان آٹھ ہزار اشخاص میں سے اکثریت ایسے لوگوں کی ہے جن کا تعلق میناریٹی کمیونٹی سے ہے اور جنہیں بہ شکایت رہی کہ اونکی معاشی حالت کو ایک دم دھکا پہنچایا گیا۔ اس سے قبل آئریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے ان امپلائمنٹ کی طرف توجہ دلاتے ہوئے فرمایا تھا کہ ایک کلیان کاری اسٹیٹ کو کیا کرنا چاہئے۔ میں یہ کہوں گا کہ یہ مسئلہ اس سے بہت گہرا تعلق رکھنے والا ہے۔ اسی وجہ سے حکومت اس کے متعلق آہستہ آہستہ اقدام کر رہی ہے لیکن وہ ایک صحیح قدم اٹھا رہی ہے۔ وہ ابالشن آف کیاش گرانٹس کے راستہ پر ہی جانا چاہتی ہے۔ لیکن قبل اس کے کہ ایسا اقدام کیا جائے اس امر کی جانچ کر لینا ضروری ہے کہ آیا اس سے کوئی مضر نتائج تو پیدا نہ ہونگے تاکہ بعد میں پچھتانا نہ پڑے۔ یہاں پر میں ایک فارسی شعر سنانا چاہتا ہوں۔ اورنگ زیب بڑے سخت آدمی تھے۔ اون کے متعلق تاریخ میں بھی لکھا ہوا ہے کہ اونکی طبیعت بڑی سخت تھی۔ انہوں نے جو مختلف خطوط لکھے ہیں اون کے مجموعہ کا نام ”رقعات عالمگیری“ ہے۔ وہ خطوط فارسی میں ہیں۔ اوس میں انہوں نے ایک خط اپنے ایک لڑکے کو لکھا ہے جس کے متعلق وہ سمجھتے تھے کہ وہ اون کا جانشین ہو کر امپرو (Emperor) ہوگا۔ اوس کو خط لکھتے ہوئے وہ اسکو نصیحت کرتے ہیں :-

آہستہ خرام بلکہ مخرام
زیر قدم ہزار جان است

یعنی آہستہ چلو بلکہ مت چلو تو بہتر ہے کیونکہ تمہارے قدموں کے نیچے ہزاروں جانیں ہیں۔ یہ کیاش گرانٹس کا معاملہ بھی ہزاروں زندگیوں سے تعلق رکھتا ہے۔ مناصب جاگیروں وغیرہ کے سلسلہ میں میرے دوست آئریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا تھا کہ یہ آپکی سہربانی سے بچے ہوئے ہیں۔ میں لیڈر آف دی اپوزیشن سے درخواست کروں گا کہ وہ اولڈ ملز کے ان امپلائمنٹ کا مسئلہ حل کریں اور میں یہ مسئلہ حل کرتا ہوں۔ اس طرح تقسیم کار ہو جائیگی۔

(Laughter)

श्री. श्री. डी. देशपांडे :—हम दोनों मिलकर हल करेंगे ।

श्री. बी. राम कृष्ण राव :—दोनوں مل کر حل کر س تو خیر میں اوسکی صراحت کرنا نہیں چاہتا ۔ لیکن اتنا یقین دلانا چاہتا ہوں کہ منصبوں کے ابا لیشن کے بارے میں عنقریب ایک امینڈمنٹ آنے والا ہے ۔ ہم اوس کے متعلق سوچ سمجھ کر اس نتیجہ پر پہنچ چکے ہیں ۔ ہفتہ عشرہ میں اسکی صراحت ہو جائیگی ۔ گزشتہ سال ہم نے بجٹ میں اس کے لئے کم گنجائش رکھی تھی ۔ یہ سوچ کر کم گنجائش رکھی تھی کہ آئندہ سال بہ بند ہو جائیگی لیکن ایسا نہ ہو سکا ۔ اس لئے اس سال بھی (۱۲) لاکھ (۷۷) ہزار کا سپلیمنٹری ڈیمانڈ کرنا پڑ رہا ہے اور مجھے امید ہے کہ ہاؤز اس کو منظور کر لیا کیونکہ عنقریب اس سلسلہ میں حکومت کی جانب سے نئے پرنسپلس (Principles) بنیں ہونے والے ہیں ۔

Delay in Abolishing Cash Grants

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 8 be reduced by Re. 1.”

The Motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 12,71,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The Motion was adopted.

Demand No. 3— General Administration—Rs. 2,03,400-Working of G. A. D.

Shri G. Sreeramulu (Manthani) : I beg to move :

That the grant under Demand No. 3 be reduced by Rs. 100.

Mr. Speaker : Motion moved.

Problem of Hyderabad House in London

Shri Katia Ram Reddy (Nalgonda—General) : I beg to move :

“That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1.”

Mr. Speaker : Motion moved.

Working of Public Service Commission

Shri V. D. Deshpande : I beg to move :

“That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1”.

Mr. Speaker : Motion moved.

Working of Land Census Scheme

Shri Ch. Venkatrama Rao (Karimnagar) : I beg to move:

“That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1”.

Mr. Speaker : Motion moved.

Some Aspects of Land Commission and Land Improvement Board.

Shri B. D. Deshmukh (Bhokardhan—General) : I beg to move :

“That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1.”

Mr. Speaker : Motion moved.

* **شری جی - سری راملو -** مسٹر اسپیکر سر - جنرل اڈمنسٹریشن کے سلسلہ میں (۵) لاکھ (۶۱) ہزار کا جو سپلیمنٹری ڈیمانڈ (Supplementary demand) ہے اس کے بارے میں میں اپنے وچار (**विचार**) رکھنا چاہتا ہوں .. جی - اے - ڈی - (**G.A.D.**) ایسا ڈپارٹمنٹ ہے جو قریب قریب تمام محکموں کے انتظامات پر حاوی رہتا ہے - اور اون کی افیشنس (**Efficiency**) اور کارکردگی کا ذمہ دار رہتا ہے - جن منڈات کے سلسلہ میں یہ ڈیمانڈ کیا جا رہا ہے اوس کی وضاحت کرتے ہوئے یہ کہا گیا ہے کہ ریونیو بورڈ کے انتظامات - مکانات کے کرائے - اسٹیٹ بینک کے اخراجات - یونس کے اخراجات ضلع کے خزانے اور آئی - اے - یس کے امیدواروں کی ٹریننگ کے اخراجات اور معلومات عامہ کے سررشتوں وغیرہ کے اخراجات کی تکمیل کے لئے یہ ڈیمانڈ کیا جا رہا ہے - گزشتہ سال جو بجٹ ہاؤز کے سامنے پیش کیا گیا اور پھر اب اوس سے ہٹ کر مزید اخراجات کرایہ مکانات یا دیگر اسٹبلشمنٹ چارجس (**Establishment charges**) کے لئے جو روپیے مانگے جا رہے ہیں وہ کیوں مانگے جا رہے ہیں - میں نہیں سمجھ سکتا کہ اوس وقت ہی بجٹ کو پیش کرتے وقت کیوں ان تمام باتوں کا جائزہ نہیں لیا گیا - میں نہیں سمجھتا کہ وہ ایسے ناگہانی اخراجات تھے جو عین وقت پر نکل پڑے کہ اون کے لئے سپلیمنٹری ڈیمانڈ کی ضرورت ہوئی ہو - یہ صرف ایکسٹراویگنٹ اکسپنڈیچرس (**Extravagant expenditures**) ہیں جو کرائے اور

دیگر انتظامی امور وغیرہ کے لئے کئے جارہے ہیں۔ اگر بروقت ڈپارٹمنٹ کی کارگزاریوں وغیرہ کی دیکھ بھال ہو جاتی تو میں سمجھتا ہوں کہ اس طرح کے غیر ضروری اخراجات کی نوبت نہ آتی۔ کرایہ کے سلسلہ میں پانچ چھ آئٹمز بتلائے گئے ہیں۔ میں سمجھ نہ سکا کہ پہلے یہ دفاتر کہاں تھے۔ اب پھر کس وجہ سے ان دفاتر کو نئے مکانات مہیا کرنے پڑے۔ یہ چیز کہیں بھی واضح نہیں ہے۔ حکومت کی طرف سے ایک پریس نوٹ سنہ ۱۹۵۳-۵۴ء کی سالانہ رپورٹ کی شکل میں ہمارے سامنے آیا۔ اس میں جنرل ایڈمنسٹریشن ڈپارٹمنٹ کی چند کارگزاریوں کی صراحت کی گئی ہے۔ اس میں یہ کہا گیا ہے کہ عوام کے نقطہ نظر اور اونکی رائے کو سامنے رکھتے ہوئے (۱۳) آدمیوں کی منسٹری کو (۱۰) تک کم کر دیا گیا ہے۔ یہ فیکٹس (Figures) اس میں لکھے ہوئے ہیں۔ میں ان الفاظ کو پھر اسمبلی کے سامنے رکھتے ہوئے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ منسٹروں کو (۱۰) تک کم کر کے پھر (۸) ڈپٹی منسٹرس کو بڑھانا کس طرح عوام کے جذبات سے تعلق رکھتا ہے۔ پریس نوٹ میں عوام کے جس جذبے کا ذکر کیا گیا اور جس کے پیش نظر کمی کی گئی تھی اب ان کے اضافے سے اوس پر پانی پھر گیا۔ اس طرح خزانہ پر مزید بار ڈالنا کہاں تک درست ہے۔ میں آنریبل منسٹر سے جن کے تفویض یہ پورٹ فولیو (Portfolio) ہے دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ کیا یہ پبلک ٹریژری پر بار نہیں ہے۔ چیف منسٹر صاحب نے ڈپٹی منسٹرس کے تقرر کے وقت یہ کہا تھا کہ اس سے عوام سے ربط قائم رکھا جائے گا۔ میں نہیں سمجھ سکا کہ اس سے پہلے جو وزارت تھی وہ عوام سے کیوں ربط قائم نہیں رکھ سکتی کہ اب ڈپٹی منسٹروں کے بڑھانے سے عوام سے ربط قائم ہو جائیگا۔ اس کو میں مان نہیں سکتا۔ جیسی اوس وقت حالت تھی اب بھی ویسی ہی رہیگی۔ ڈپٹی منسٹرس کی تعداد بڑھا کر بلاوجہ خزانہ پر بار ڈالا گیا ہے۔ آج ان ایگراکچل (Agricultural economy) بڑھ رہا ہے۔ اگر کیکلچرل اکانمی (Unemployment) بڑھ رہا ہے۔ مواضعات میں پنچایتیں برابر کام نہیں کر رہی ہیں۔ مدارس کے لئے مکانات نہیں ہیں۔ ان ضروری مسائل کی طرف توجہ نہ دیتے ہوئے صرف اپنے ہی گھر کو سنبھالنے کے لئے ہی اتنے اخراجات ہو رہے ہیں۔ میں کہوں گا کہ یہ غیر موزوں اخراجات ہیں۔

انسپکٹر آف آفسس کا دفتر کھولنے کے متعلق بھی ذکر کیا گیا ہے۔ اس کے بارے میں میں چند الفاظ بیان کرنا چاہتا ہوں۔ انسپکٹر آف آفسس کے دفتر کا جو قیام عمل میں آیا ہے وہ آفسس کی افیشنسٹی بڑھانے۔ عہدہ داروں اور ملازمین کو ٹھیک طور سے کام پر لگانے اور ان کی ضروریات پوری کرنے کے معاملہ میں کسی طرح مدد و معاون ثابت نہ ہو سکا۔ مجھے اس کا تجربہ ہے کہ دفاتر میں ملازمین وقت پر نہیں آتے۔ تمام دفاتر خالی پڑے رہتے ہیں۔ اور آتے بھی ہیں تو تین تین چار چار مرتبہ جائے کافی وغیرہ بننے میں وقت ضائع کرتے ہیں۔ پبلک کا کام اس طرح ہوتا ہے کہ ایک ایک درخواست مہینوں تک ٹیبل پر ہی پڑی رہتی ہے۔ جمعہ کے دن ملازمین کے ایک خاصے دن

کے لئے نماز کے واسطے دیڑھ گھنٹہ دیا جاتا ہے ۔ سیکولر اسٹیٹ میں جب آپ کسی خاص فرقے کو اس طرح کا ٹائم دیتے ہیں تو دوسرے فرقوں کے لئے بھیجن اور پوجا پاٹ کے لئے بھی وقت دینے کا سوال پیدا ہو جاتا ہے ۔ آپ ملازمین میں امتیاز کر رہے ہیں ۔ عموماً لوگ گیارہ گیارہ بجے آتے ہیں ۔ ایک گھنٹہ بھی کام کرنے نہیں پاتے کہ نماز کا وقت ہو جاتا ہے ۔ نماز سے دو بجے واپس آتے ہیں پھر ایک آدھ گھنٹہ کام کرتے ہیں اور چار ساڑھے چار بجے واپس چلے جاتے ہیں ۔ آپ نے روزانہ ان لوگوں کا سیکلوں کا پوسیشن چار بجے کے وقت اسمبلی کے سامنے سے گزرتے ہوئے دیکھا ہوگا ۔ میں یہ کہہ دینا چاہتا ہوں کہ کہیں بھی کام برابر نہیں ہوتا ۔ یہ لوگ بیس فیصد کام بھی روزانہ نہیں کرتے ۔ میں یہ دعویٰ کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ مواضع کے دفاتر میں تو لوگ ٹیبلوں پر پاؤں ڈال کر سوتے رہتے ہیں ۔ اس کے متعلق تحصیلدار صاحب اور دیگر عہدہ داروں کو جب لکھتے ہیں تو کوئی توجہ نہیں دیتی ۔ وہ لوگ پاؤں ہسار کے سوتے رہتے ہیں ۔ چائے آتی رہتی ہے پیتے رہتے ہیں ۔ کچھ چائے فائلوں پر گر جاتی ہے ۔ اوس کو چیونٹیاں یا دیہک لگی جاتی ہے اور فائل غائب ہو جاتی ہے ۔ حال ہی میں آنریبل منسٹر فار اگریکلچر نے کسی سلسلہ میں کہا کہ فائل نہیں مل رہی ہے ۔ ہماری میونسپالٹی کا ذکر کرتا ہوں کہ وہاں فائل دیکھنے کی ضرورت تھی جب تحصیلدار صاحب سے کہا گیا تو انہوں نے جواب دیا کہ فائل نہیں مل رہی ہے ۔ ضلع کے دفاتر کی یہی حالت ہے ۔ انسپکٹر آف آفس کو اس کے متعلق اچھی طرح کام پر لگانا چاہئے اور اون کے کام میں وسعت پیدا کرنا چاہئے ۔ ورنہ جو سسٹم پہلے سے چلتا رہا وہی اب بھی چلتا رہیگا ۔ سرکاری ملازمین میں کام کرنے کا جو رجحان ہے اوسکی طرف میں جنرل اڈمنسٹریشن ڈپارٹمنٹ کی توجہ مبذول کروانا چاہتا ہوں ۔

چیف سکرٹریٹ کے آفس میں چیف سکرٹری کے طور پر جو صاحب کام کرتے ہیں وہ باہر کے آدمی ہیں ۔ میں نہیں سمجھ سکا کہ اس طرح باہر کے آدمی کو اب تک وہاں کیوں رکھا گیا ۔ اس میں کمیوں تبدیلی نہیں ہوتی ۔ جس طرح جوڈیشیل ڈپارٹمنٹس کے ہیڈ باہر کے ہیں چیف سکرٹری بھی باہر کے ہیں ۔ اسی طریقہ سے بعض بڑے بڑے سرشتوں پر باہر کے ہیڈس آئے ہیں ۔ اس کا صاف مطلب یہ نکلتا ہے کہ حکومت ہمارے اڈمنسٹریشن کو ہیڈلس (Headless) بنانا چاہتی ہے ۔ میں یہ کہہ دینا چاہتا ہوں کہ یہاں پر بھی ویسی ہی قابلیت رکھنے والے لوگ مل سکتے ہیں جو کم تنخواہ پر اچھی طرح سے کام کر سکتے ہیں ۔ اس کے باوجود باہر کے آدمیوں کو برقرار رکھا گیا ہے ۔ اس اصول کو چیف منسٹر صاحب نے بھی اسمبلی میں کئی مرتبہ مان لیا ہے ۔ لیکن مجھے افسوس ہے کہ وہ اصول پایہ تکمیل کو نہیں پہنچ رہا ہے ۔ حال ہی میں کلکٹروں کی ایک کانفرنس بلائی گئی تھی اوس میں تمام ضلعوں کی انتظامی سہولتوں کے متعلق غور کیا گیا ۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ جو اڈمنسٹریٹو

ہیڈس ہوتے ہیں وہ ایسی باتوں کو اس کان سے سنتے ہیں اور اوس کان سے اڑا دیتے ہیں۔ کلکٹروں کے پاس برابر رپورٹیشن ہوتا ہے لیکن اوس کا جواب نہیں ملتا۔ اس کے قبل جب رپورٹیشن ہوتا تھا اور کسی قسم کی درخواست پیش کی جاتی تھی تو کم از کم اوسکی رسید دیجاتی تھی۔ رسید دینے کے لئے ہی پرنٹیڈ (Printed) رسید گورنمنٹ کی طرف سے سپلائی کی گئی ہے لیکن آجکل وہ بنی نکال دی گئی ہے۔ کم از کم تعلقہ کے چھوٹے سوئے لوگوں کی آواز حکومت تک نہیں پہنچتی ہے تو ایک لاکھ عوام کی طرف سے نمائندہ بنکر جو لوگ آئے ہیں اور یہاں بیٹھے ہوئے ہیں ایسے لوگوں کی درخواستوں کا جواب تو ملے کہ فلاں تاریخ کو درخواست پہنچی ہے۔ اگر یہ بھی نہ معلوم ہو سکے تو ہم اس ہاؤز سے کیا امید رکھ سکتے ہیں۔ مجھے کبھی کہی اس پر رونا بھی آتا ہے۔ میں نہیں کہہ سکتا کہ ان چھوٹی چھوٹی باتوں کی طرف کب دھیان دیا جائیگا۔ کم سے کم یہ انتظام جی۔ اے۔ ڈی کی طرف سے کیا جائے کہ درخواستوں کی رسید دیجائے تو درخواست دینے والے کو تسلی ہوگی کہ آج نہیں تو پانچ سال کے ختم تک اوسکی درخواست پر کوئی نہ کوئی کارروائی ہوگی۔ عوام کو اس ہو جائیگی۔ ایک سوال کے جواب میں آنریبل چیف منسٹر نے کہا کہ

“To reply to all the applications will be mere waste of paper.”

اس طرح ویسٹ آف پیپر (Waste of paper) ہوگا یہ خیال ظاہر کیا گیا۔ عوام جب اپنی تکالیف کو دور کرنے کے لئے درخواست دیتے ہیں تو اسکے رپلائی (Reply) کے لئے ایک پیپر ویسٹ (Paper waste) ہو جاتا ہے تو میری سمجھ میں نہیں آیا کہ یہ ویسٹیج (Wastage) اور لیکج (Leakage) کونسے ڈپارٹمنٹ میں نہیں ہے۔ حقیقت میں جہاں ویسٹیج اور لیکج ہے اسکا استفادہ تو نہیں کیا جاتا۔ جہاں کرپشن (Corruption) ہے اسکا انسداد نہیں کیا جاتا لیکن عوام کی تسلی کے لئے ایک درخواست کی رسید دیدیجائے تو اس سے ویسٹ آف پیپر ہوتا ہے۔ اگر بیس ہزار سائڈ خرچ ہو جائینگے تو اس سے ایسا کونسا بھاری نقصان ہو جائیگا۔ انڈسٹریشن کی ایفیشنسی کو بڑھائیں تو لوگوں کو تسلی ہوتی ہے۔ درخواستوں کی رسید وصول ہو جائے تو عوام کو تسلی ہوتی ہے کہ ہماری درخواست پہنچ گئی ہے اس پر غور کیا جائیگا۔ اس طرح لوگوں کا بھروسہ اور اعتماد حاصل کیا جاسکتا ہے۔ اس قسم کی تسلی دینا ضروری ہے۔ میں ایک چھوٹی سی چیز مانگ رہا ہوں کوئی بڑا پراجیکٹ نہیں مانگ رہا ہوں۔ کوئی ریویلیوشنری چینج (Revolutionary change) نہیں چاہ رہا ہوں۔ میری چھوٹی سی مانگ کو بھی حکومت پورا نہیں کر رہی ہے۔ میں سیکرٹری مانگ کرونگا کہ حکومت کو اس پر توجہ کرنی چاہئے۔

سرکاری ملازمین کا بے وقت تبادلہ بھی ایک بڑا مسئلہ بنکر ہو گیا ہے۔ کہیں تو تین سال سے زیادہ عرصہ تک ایک افسر کو رکھا جاتا ہے اور کہیں ایسا ہوتا ہے کہ

جلد جسم بادلے کئے جاتے ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ تبادلوں کے لئے اصول معین ہوں لیکن اگر۔ مگر۔ بشرطیکہ وغیرہ کی گنجائش ایسے لوپ هولس (Loop-holes) پیدا کر دینی ہے کہ اسکا سہارا لیا جاتا ہے۔ کسی ملازم کا تبادلہ کل ہی ہوا ہے وہ اگر کام شروع کرنا ہے کہ دوسرے دن پھر اسکا تبادلہ کر دیا جانا ہے۔ بادلے سوچ سمجھ کر نہیں کئے جاتے ہیں۔ پہلے سے غور کرنا چاہئے کہ کس شخص کو کہاں رکھنا مناسب ہے۔ بجز اسکے کہ کسی ملازم کے خلاف سنگین الزام ہو بلا کسی وجہ کے کسی کا تبادلہ تین سال سے پہلے نہیں کرنا چاہئے۔ سنگین الزامات کی سزا آج کل یہ دی جا رہی ہے کہ بس تبادلہ کر دیا جانا ہے۔ بادلے سے یہ ہوتا ہے کہ ایک تعلقہ کا روگ دوسرے تعلقہ میں پھیل جائیگا۔ متبادلہ ملازم ہر جگہ اپنے چالوں کا بیج بوتا جائیگا۔ اس طرح متعدی مرض ہو جائیگا۔ اس لئے میں یہ کہوں گا کہ اگر کسی ملازم سے غلطی ہوئی ہے تو اس کو کوئی سزا دیجانی چاہیے۔ تبادلے سے اس کی غلطیوں کا اسناداد نہیں ہو سکتا۔ تبادلہ کر دینا مرض کا کوئی علاج نہیں ہے۔ حکومت کو چاہیے کہ اس کے آؤٹ لک (Out look) کو چینیج کرے۔ جب کوئی ملازم ایک جگہ موزوں نہیں ہے تو وہ دوسری جگہ کیسے موزوں ہو سکتا ہے۔ اس طرح کار جہان غلط ہے۔ ہر شخص یہ چاہتا ہے کہ وہ اپنی پسند کے مقام پر رہے۔ جہاں اپنے لئے سہولت سمجھتا ہے وہاں رہنا چاہتا ہے یا اپنے مقام سے قرب و جوار میں رہنا پسند کرتا ہے۔ تبادلوں کے لئے سکریٹریٹس۔ ریوینیو بورڈ وغیرہ ہر جگہ پیرویاں کی جاتی ہیں۔ ایسی پیروی کرنے والوں کو ختم کرنا چاہیے۔ حکومت کو چاہیے کہ وہ افیشینسی کے ساتھ کام کرے۔ اصول سے ہٹ کر کام کیا جائے تو لوگوں کو پیروی کا موقع ملتا ہے۔ ہوتا یہ ہے کہ کسی ملازم کو ایک ہی جگہ پانچ دس سال گزر گئے ہیں۔ لیکن حکومت اس کو وہیں رکھنا چاہتی ہے۔ بعض ایسے کیس ہیں کہ تین سال نہیں ہوئے ہیں لیکن تبادلہ کر دیا جاتا ہے۔ اس طرح اکثر لوگوں کے نام اسمبلی میں آئے ہیں۔ ہسٹک صاحب وغیرہ کا نام اسمبلی میں لیا گیا ہے۔

پروموشنس (Promotions) کی حد تک بھی یہی ہوتا ہے کہ جس کو مناسب سمجھیں اس کو دیا جاتا ہے۔ رینک (Rank) وغیرہ کا لحاظ نہیں کیا جاتا۔ اگر حکومت کی ایسی پالیسی رہے تو حکومت ڈھیلی ہو جائیگی۔ اس طرح کی غیر مناسب مثالیں عوام کے سامنے قائم نہیں کرنا چاہیے۔ حکومت کی نگرانی اچھی ہونی چاہیے۔ میں نے جی۔ ایے۔ ڈی پر جو تبصرہ کیا ہے اس کو ملحوظ رکھ کر حالات کو ٹھیک کرنے کی کوشش کرنی چاہیے۔ مجھے امید ہے کہ اس تبصرے کے مدنظر حالات کو بہتر بنانے کی کوشش کی جائیگی۔

شری کٹہ رام ریڈی۔ مسٹر اسپیکر سر۔ میں نے ایک چھوٹا سا کٹ موشن پیش کیا ہے۔ اس سلسلہ میں میں دو بیجٹ سشنوں کے دوران میں یہ عرض کرتا آیا ہوں کہ مانارکی (Monarchy) یا شخصی حکومت کے بعد جب عوامی حکومت آئی ہے تو گورنمنٹ کو چاہئے کہ افیشینسی کو مینٹین (Maintain)

کرے۔ اور اس کو اڈجسٹ کرنے میں حکومت کا کوئی ایک نظریہ ہونا چاہئے۔ میں کہہونگا کہ وہ نظریہ حکومت کے ذہن میں اب تک پیدا نہیں ہوا ہے۔ وہی نظام سنا ہی دربار ہے۔ اس کا وہی بجٹ ہے۔ بجٹ کے وہی مددات ہیں۔ وہی اخراجات ہیں۔ حکومت کا خرچ زیادہ ہوتا جا رہا ہے جسکی وجہ سے اسکا اظہار کیا گیا ہے کہ ٹکسس کا اضافہ ہوگا۔ راج پرمکھ کے اڈریس میں اور بجٹ اسپچ میں منسٹر صاحب نے اس جانب اشارہ کیا ہے کہ ٹکسس میں اضافہ ہوگا۔ یہ سوچنا چاہئے تھا کہ عوامی حکومت کے دور میں کس طرح اخراجات کو اڈجسٹ کر کے عوام کو فائدہ پہنچایا جاسکتا ہے۔ کس طرح عوام کے مفاد کو آگے بڑھایا جاسکتا ہے۔ یہ نظریہ اب تک مجھے حکومت میں نظر نہیں آ رہا ہے۔ کم از کم اتنی تو پابندی کی جاتی کہ پابند موازنہ رہتے۔ جو موازنہ منظور ہوا ہے اوسی حد تک خرچ کیا جاتا۔ لیکن ایسا نہیں کیا جاتا بلکہ سلیمنٹری گرانٹس منظور کرائے جاتے ہیں۔ وہ ایسے مددات بھی نہیں ہیں کہ اون سے کوئی غیر معمولی کام عوام کی بہبودی کے لئے کئے گئے ہیں۔ ان حالات کو دیکھتے ہوئے میں یہ کہہونگا کہ گورنمنٹ کی جو ذمہ داری ہے وہ سلف افیشینسی (Self-efficiency) سے کام نہیں کر رہی ہے۔ بلکہ ماتحتین کے اشاروں پر چلتی ہے۔ یہ میرا چارج (Charge) ہے حکومت پر۔ ان باتوں پر توجہ کی جائے۔ کارروائیوں کی گہرائیوں میں جائیں اور غور کریں کہ کس مد میں کتنی بچت ہوسکتی ہے تو یقیناً اخراجات میں کمی کا امکان ہے لیکن ایسا نہیں ہوتا بلکہ سکرپٹری بجٹ پیش کرتے ہیں وہی لاکر یہاں اسمبلی میں پیش کر دیا جاتا ہے۔ چلو منظوری حاصل ہو جاتی ہے۔ میں کہہونگا کہ کم از کم سنجیدگی سے آئندہ سال کے بجٹ کے بارے میں سوچا جائے کہ اخراجات میں کیسے کمی ہوسکتی ہے، بغیر ترقیاتی منصوبوں کو گھٹانے کے موازنے کو کس طرح ٹھیک کر سکتے ہیں۔ ہر سال ہماری حکومت سنٹر کی امداد لیتی ہے اور سنٹر کی امداد پر چل رہی ہے۔ لیکن امداد کا بھروسہ کب تک۔ ہمیں سلف سفیشنٹ (Self-sufficient) ہونا چاہئے۔ حیدرآباد کے کاشتکاروں کا جو چھوٹا طبقہ ہے انکا کیا حال ہے؟ ہم ذرا دلچسپی لیں اور انکی تکالیف کو دور کرنے کے لئے رقم پرووائڈ کریں تو ہوسکتا ہے۔ مگر اس طرف توجہ کم ہو رہی ہے۔ لاکھوں کروڑوں روپیہ صرف ہو رہا ہے لیکن جیسا کہ فائدہ ہونا چاہئے نہیں ہو رہا ہے۔ میں نے گذشتہ بجٹ سشن میں انگلینڈ کی بلڈنگ کے متعلق کہا تھا اور اسمبلی کے ممبروں نے بھی توجہ دلائی تھی کہ اس بلڈنگ سے کیا آمدنی ہو رہی ہے اور اس کے بالمقابل خرچ کیا ہو رہا ہے۔ ہم نے توجہ دلائی تھی کہ اس بلڈنگ کو فروخت کر دیا جائے کیونکہ ہم کو رقومات کی ضرورت ہے۔ نیشنل بلڈنگ ورکس کے لئے رقومات کی ضرورت ہے۔ پیسہ کی کمی کی وجہ سے ہم کسی پلان کو عمل میں نہیں لاسکتے۔ یہ بلڈنگ اوس زمانے کی یادگار ہے جبکہ حضور نظام کے عزیز و اقارب وہاں جا کر ٹھہرتے تھے۔ اب اسکو فروخت کیا جاسکتا ہے۔ اسکو فروخت کیا جائے تو سالانہ

دکھیں۔ اس کے اخراجات بھی بج جائیں گے۔ ان اخراجات کے لئے بجٹ میں نہ کوئی براویزن
رہے اور نہ سلیمنٹری ڈیمانڈ لانے کی ضرورت ہوگی۔ اس لئے میں آنریبل چیف منسٹر
سے عرض کروں گا کہ ایسے اخراجات کم کرنے کی کوشش کی جانی چاہئے۔ سنہ ۱۹۵۳-۵۴
کے بجٹ میں اسے مدد نہ رکھی جائیں۔ یہ درخواست کرتے ہوئے میں اپنی تقریر
ختم کرنا چاہوں۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—मिस्टर स्पीकर सर, मैंने एक छोटा सा कटमोशन पब्लिक सर्विस
कमिशन के बारे में हाउस के सामने रखा है। मैं अपने मोशन को प्रेस (Press) करने-
वाला नहीं हूँ। सिर्फ एक वाक्या हाउस के सामने रखना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि तीन सुपरि-
टेंडिंग अिन्जीनिअर्स की जगहों के बारे में एक मसला पब्लिक सर्विस कमिशन और हुकूमत के सामने
काफी अर्से से जेरेबहस है। सुना गया है कि पब्लिक सर्विस कमिशन की राय किन को सुपरिटेंडिंग
अिन्जीनिअर्स कायम करना चाहिये इस सिलसिले में ली गयी तो उन्होंने उनका पिछला रेकार्ड
मंगवाकर अपनी राय हुकूमत के सामने पेश की। हुकूमत ने जो सिफारिशात की थी वह अलग थी
और पब्लिक सर्विस कमिशन की तरफ से जो सिफारिशात आयी है वह अलग है। यह मसला एक
जमाने से जेरेगोर है। मैं हुकूमत से मालूम करना चाहता हूँ कि जब इस तरह के मतभेद हुकूमत
और पब्लिक सर्विस कमिशन में होते हैं तो क्या उसको तय करने के लिये बीच का कोयी रास्ता है
या नहीं, या यह चीज इसी तरह से जमाने तक जेरेबहस ही रहेगी? मैं पब्लिक सर्विस कमिशन
से भी यही ख्वाहिश रखूंगा कि जो व्हेकन्सीज (Vacancies) फिल अप (Fill up)
नहीं हुयी और जिनके बारे में हुकूमत भी उनकी सिफारिशात को नहीं मान सकती
उनके बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन फिर से अपने अुजरात पर गौर करे लेकिन एक जमाने तक
अैसे मसलों को अनिर्णित रखना ठीक नहीं है। या हुकूमत को चाहिये कि वह पब्लिक सर्विस कमिशन
के सिफारिशात को क्यों नहीं मानती इसको साफ तौर से हाउस के सामने रख दें या अपने वजूहात
पब्लिक सर्विस कमिशन के सामने पेश कर दें। मुझे जो कुछ मालूम हुआ है उस पर से मैं यकीनी तौर
पर कोयी राय देना मुनासिब नहीं समझता लेकिन यह जरूर महसूस करता हूँ कि जिन मसलों का
फैसला करने में डीले (Delay) किया जा रहा है। कहा जाता है कि जिन अिन्जीनिअर्स
के बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन ने अपनी राय ताओद में दी है उनके रेकार्ड्स अच्छे हैं और हुकूमत
की तरफ से जिनके बारे में सिफारिशात की गयी है उनके रेकार्ड्स कुछ अच्छे नहीं हैं। अगर यही
मसला जेरे गौर है कि रेकार्ड्स अच्छे हैं या नहीं तो मैं समझता हूँ कि अैसे जायदादों को फुलफिल
(Fulfil) करते वक्त सिर्फ उनका पिछला रेकार्ड अच्छा है या नहीं इसी सवाल को
लेकर पब्लिक सर्विस कमिशन किसी नतीजे पर नहीं पहुच सकती और न उसको पहुचना चाहिये।
चीफ मिनिस्टर साहब हाउस के सामने यह बता सकते हैं कि जिन जायदादों के सिलसिले में अुन
तमाम लोगों का जिनकी सिफारिशात हुकूमत की तरफ से की गयी थी या जिनके बारे में पब्लिक
सर्विस कमिशन से सिफारिशात आयी है उनका अक रेग्यूलर अिटरव्यू (Regular
interview) पब्लिक सर्विस कमिशन की तरफ से लिया गया है या नहीं और जिन जायदादों
को फिलअप (Fill up) करने के लिहाज से अुन लोगों के क्वालिफिकेशन्स (Qualifica-
tions) तजरूबा अुनका टेक्निकल नालेज (Technical knowledge) जिनके

बारे में भी सोंचा गया है या नहीं या सिर्फ पिछले रेकार्ड्स को ही अहमियत देकर यह मामला तय किया जा रहा है। क्योंकि अगर सिर्फ रेकार्ड का ही ख्याल किया जाय तो जैसे जिन्जीनिअर्स जो निजाम के जमाने में काम करते थे और मुमकिन है निजाम के पैलेस में ही वे काम करते हों तो उनके बारे में रिपोर्ट्स बहुत अच्छे हों सकते हैं। अंसी हालत में सिर्फ पिछले रेकार्ड की बिना पर ही अगर पब्लिक सर्विस कमिशन किसी मसले को तय करती है तो वह मैं मुनासिब नहीं समझता। चूंकि यह सवाल हमारे सामने अब आया है मैं गवर्नमेंट की राय पर कोई नुक्ताचीनी नहीं करना चाहता लेकिन यह चाहता हू कि मुनासिब तौर पर इस मसले को हल किया जाय और इसमें मतभेद पैदा हो गया है तो हुकूमत अपने राय के साथ सब चीजों को पब्लिक सर्विस कमिशन के पास भेज दे और पब्लिक सर्विस कमिशन के लिये भी यह जरूरी हो जाता है कि उन तमाम लोगों का अिटरव्यू लेकर वह इसको हल करे। इसके बारे में हुकूमत और पब्लिक सर्विस कमिशन दोनों की जो पालिसी आज है उससे जो डिससेटिसफेक्शन (Dissatisfaction) फैला हुआ है उसके लिहाज से मैं समझता हू कि अगर मुनासिब समझा जाय तो इस सवाल को हाबुस के सामने साफ तौर से रखा जाय ताकि इस हाबुस की मदद से भी इस सवाल को किस तरह से हल किया जा सकता है। इसके बारे में आपको हाबुस की मदद मिल सकती है। मैं अुम्मीद करता हू कि चीफ मिनिस्टर इस पर काफी रोशनी डालेंगे।

شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ - مسٹر اسپیکر سر - میں نے اپنا کٹ موشن لینڈ سنسز کی بد عنوانیوں کی روک تھام کے لئے حکومت کو توجہ دلانے کی غرض سے پیش کیا ہے - اس سے قبل بھی اس سلسلے میں ایک تحریک التوا لائی گئی تھی - ضلع کریم نگر میں تعلقہ جات سلطان آباد اور کریم نگر میں لینڈ سنسز ورک کیا جا رہا ہے - وہاں یہ کام ہر تعلقہ کے ہٹیل پٹواریوں کے سپرد کیا گیا ہے - انہیں ہدایتیں دی گئی ہیں کہ کاسرا فارم اس طرح فل اپ (Fill up) کئے جائیں لیکن ان لوگوں نے رشوت کا بازار لگا رکھا ہے - اور غلط انداز جات سے کافی فسادات بنی پیدا کر رہے ہیں - حالانکہ کاسرا فارم میں یہ صاف طور پر ہے کہ اگر زمین پر کوئی قابض ہے تو ایک خانہ میں اس کا نام درج کیا جائے - اگر زمین کے لئے کوئی ڈسپوٹ ہے تو دوسرے خانہ میں اس کا نام درج کیا جائے - جہاں پرانے قبضے ہیں ان کے بارے میں اسی طرح عمل کیا جائے - لیکن ان خانوں کے اندراج کے لئے ہٹیل پٹواری پرانے قابضین سے بھی وثیقہ جات یا رجسٹری شدہ بانڈز طلب کر رہے ہیں - اور اس میں کئی بد عنوانیاں پیدا کی جا رہی ہیں - ہم نے یہ حالات ضلع کے متعلقہ عہدہ داران کے پاس بھی پیش کئے کہ عوام کو اس طرح تکلیف دی جا رہی ہے - لیکن اس کام کے لئے جو اسپیشل تحصیلدار وغیرہ مقرر کئے گئے ہیں وہ ہمیں یہ جواب دیتے ہیں کہ اس ضمن میں کسی موضوع سے کوئی شکایت نہیں آئی اس لئے شکایت میں کوئی اصلیت نہیں ہے - ہم نے ان کے سامنے ان موضوع کے ہزاروں افراد کو لا کر پیش کر دیا اور کلکٹر صاحب کے پاس وہ سب لوگ پیش کئے گئے - اس طرح زندہ ثبوت عہدہ داران کے سامنے پیش کیا گیا - واقعہ یہ ہے کہ ایک ایک موضوع سے لینڈ سنسز کے بارے میں ہزاروں روپیہ نا جائز وصول کئے جا رہے ہیں - اگر کسی شکایت کی شنوائی ہوتی

بھی ہے تو زیادہ سے زیادہ پٹیل پٹواری کو معطل کیا جاتا ہے۔ لیکن تھوڑے ہی دنوں کے بعد وہ پھر بحال ہو جاتا ہے اس لئے کہ سب لوگ آپس میں ملے ہوئے ہوتے ہیں۔ ہر موضع کا یہی حال ہے۔ البتہ کسی جگہ یہ بد عنوانیاں کم ہیں اور کسی جگہ زیادہ ہیں۔ کریم نگر کے اطراف میں ایسے کئی مواضع ہیں کنڈا پور۔ رکما پور۔ رودرام۔ بوتکور۔ چوہانڈی۔ کولم کنٹہ۔ ان مواضع میں ہزاروں روپیہ کی رقمیں وصول کی گئی ہیں جن میں پٹیل پٹواریوں گرداور اور تحصیلدار سب کے حصے ہیں۔ یہ سب اس میں انوالو (Involve) ہیں۔ ہم عوام کو لاکر ادھیکاریوں کے سامنے پیش کرتے ہیں تو زیادہ سے زیادہ کسی پٹواری کو معطل کیا جاتا ہے۔ میں آنریبل چیف منسٹر کی توجہ اس جانب دلانا چاہتا ہوں کہ جب تک اس سلسلہ میں اسٹرانگ میٹرس اختیار نہ کئے جائیں حالت ٹھیک نہیں ہو سکتی۔ کیونکہ وہ معطل پٹواری بعد میں بحال ہو ہی جاتا ہے۔ ایک سوال کے جواب میں چیف منسٹر صاحب یہ کہتے ہیں کہ اگر کسی کو اعتراض ہو تو ۱۰ دن کے اندر وہ درخواست دیکر تصحیح کروا سکتا ہے۔ لیکن میں پوچھتا ہوں کہ کیا ہر شخص دیہات سے یہاں آکر درخواست پیش کر کے تصحیح کروا سکتا ہے۔ کیا وہ اتنا لنتھی پروسیجر (Lengthy procedure) (Adopt) کر سکتا ہے۔ وہ تو یہی چاہتا ہے کہ چار پیسے خرچ ہوں تو ہر لیکن کسی طرح اس کا کام وہیں دیہات ہی میں تکمیل پا جائے۔ دیہاتیوں کی یہ سائیکالوجی ہوتی ہے۔ اس بات کو سب ہی مانتے ہیں۔ میں کہہ رہا تھا کہ آپ کے پاس۔ سی آئی۔ ڈی۔ پولس۔ آپ اس بدعنوانی کے انسداد کے لئے اس کو کیوں استعمال نہیں کرتے۔ پولس اور سی۔ آئی۔ ڈی کے ذریعہ ان ادھیکاریوں کو گرفتار کیجئے جو اس میں انوالو ہیں۔ اور انہیں سخت سے سخت سزا دی جائے۔ جب تک کہ اسٹرانگ میٹرس ایسی بدعنوانیاں پھیلانے والوں کے خلاف استعمال نہ کئے جائیں حالات سدھر نہیں سکتے۔ محض (۱۰) دن کی مدت درخواست پیش کرنے کے لئے دیکر یہ سمجھنا کہ سب کام بالکل ٹھیک طور پر انجام پارہے ہیں یہ غلطی ہے۔ اس کی بجائے غلطیوں کے خلاف سخت اسٹپس لئے جانے چاہئیں۔

* سری بی۔ ٹی۔ دیشمکھ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ میں نے ڈیمانڈ نمبر (۳) سے متعلق جو کٹ موشن رکھا ہے اس کی غرض یہ ہے کہ ایک زمانے سے اس ہاؤس سے یہ مطالبہ کیا جا رہا تھا کہ حکومت جو بھی کمیشنس یا بورڈس بناتی ہے ان میں ملک کی مختلف سینٹری پارٹیوں اور اداروں کو انکی تعداد اور قوت کے لحاظ سے رپریزنٹیشن ملنا ضروری ہے۔ اس اصول کے بارے میں سخت سے سخت تنقید ہوئی۔ میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی ہاؤس نے کئی بار اسکا وعدہ بھی کیا کہ اس اصول کو ملحوظ رکھا جائیگا۔ لیکن محسوس ہے کہ علی میدان میں لینڈ کمیشن ٹینسی کمیشن یا دوسرے کمیشنس میں ایوزیشن یا رٹیز یا دوسری پارٹیوں کو کوئی رپریزنٹیشن نہیں ملا۔ لینڈ امپروومنٹ بورڈ کے بارے میں آنریبل منسٹر نے یہ وعدہ کیا تھا کہ یہ ٹیکنیکل کمیٹی ہے۔ اس کے لئے ماہرین فن چاہے وہ ہاؤس کے باہر کے ہی کیوں نہ ہوں مقرر کئے جاسکتے ہیں۔

لیکن معلوم ہوا ہے کہ اس ہاؤس کی رولنگ پارٹی ہی میں سے چند لوگوں کو نامزد کیا جا رہا ہے۔ حال ہی میں لینڈ کمیشن کی جو تشکیل ہوئی اسکی تمثیل میں ہاؤس کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں۔ یہ ہاؤس جو ایک اعلیٰ جمہوری ادارہ سمجھا جاتا ہے اور جسکو پورے ملک کی نمائندگی کا حق دیا گیا ہے محض بھیک کے طور پر لینڈ کمیشن میں اپوزیشن کو ایک سیٹ دینے کا اعلان کیا گیا ہے۔ لیکن ڈائریکٹ الکشن ہونے کی وجہ سے اپوزیشن کے دو ارکان منتخب ہو کر کمیشن میں آجائے ہیں۔ اس کا صدمہ میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی ہاؤس کو ضرور ہوگا۔ اگر آپ یہ سمجھتے ہیں کہ آزادی رائے یا پروپوزیشنل ریپریزنٹیشن کا حق دیا جائے تو اس سے وہ لوگ منتخب ہو کر آجائیں گے جنہیں آپ نہ چاہتے ہوں یہ خیال جمہوریت کی سراسر ترہین ہے۔ لینڈ کمیشن کے سلسلہ میں جو نام پیشن ہوئے ہیں اس بارے میں یہ کہا گیا تھا کہ باہر کے لوگ نہیں ہو سکتے ہیں۔ ۷ میں سے رولنگ پارٹی کے ۳ ارکان تو منتخب کئے گئے۔ اور باہر کے ۴ ارکان کو موقع مل سکتا ہے۔ یہ دعویٰ کرنا کہ ہاؤس کے ارکان ہی زیادہ واقفیت رکھتے ہیں انہیں ہی لینا چاہئے یہ صحیح نہیں ہے۔ محض رولنگ پارٹی کو خوش کرنے کے لئے نامینیشن کا طریقہ ہر دو کے لئے نامناسب ہے اور یہ جذبہ جمہوریت کے منافی ہے۔ اس بارے میں ہاؤس کے ارکان نے مختلف اوقات میں اپنے خیالات ظاہر کئے۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ ایپرومنٹ بورڈ کے بارے میں جسکا ابھی اعلان نہیں ہوا ہے لیڈر آف دی ہاؤس مسئلہ کو مناسب طور پر حل کریں گے اور آئندہ جو الکشن اسمبلی کے ہونے والے ہیں اس میں ڈائریکٹ الکشن کا جو طریقہ ہے اسکے بجائے پروپوزیشنل ریپریزنٹیشن کا طریقہ اختیار کیا جائیگا۔ ان چند چیزوں کے سلسلہ میں میں نے یہ کٹ موشن دیا تھا اور میں سمجھتا ہوں کہ لیڈر آف دی ہاؤس اس بارے میں ہاؤز کو مطمئن کرنے کی کوشش کریں گے۔

شری بی۔ رام کشن راؤ۔ سر۔ جو کٹ موشن اب پیش ہوئے ہیں ان میں سے ہر ایک کے بارے میں میں چند الفاظ کہنا چاہتا ہوں۔ سب سے پہلا کٹ موشن آنریبل ممبر فار منتہی کا ہے جنہوں نے جی۔ اے۔ ڈی (G.A.D.) کی ورکنگ (Working) پر بہت کچھ تنقید کی ہے۔ پہلے تو انہوں نے یہ فرمایا کہ جو سبلمنٹری گرانٹس (Supplementary grants) پیش کئے جارہے ہیں ان کو پہلے سے انٹیسپیت (Anticipate) کیا جاسکتا تھا، یہ اضافہ کوئی ناگہانی حادثات کی وجہ سے نہیں ہوا، یہ سب چیزیں پہلے سے نہ سوچنے اور سوچنے کی نا اہلیت کی وجہ سے پیش ہو رہی ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر نے ان سب مددات کو پڑھنے کی تکلیف گوارا نہیں فرمائی ورنہ ان کو معلوم ہو جاتا کہ یہ ناگہانی کی تعریف میں آسکتے ہیں۔ غیر ضروری اخراجات نہیں کئے گئے اور اخراجات میں کوئی اضافہ نہیں کیا گیا بلکہ ایسے مددات کے لئے سبلمنٹری گرانٹس مانگے جارہے ہیں جو بعد کے واقعات کی وجہ سے نہ گزر ہو گئے۔ آنریبل ممبر کو ایک اور بھی مغالطہ ہوا ہے۔ انہوں نے غالباً یہ سمجھا کہ ہم نے

بہت سے آفس کے لئے کرایہ برمکنات لئے ہیں اور اس کے لئے یہ مطالبات کئے جا رہے ہیں۔ چنانچہ میں ان کے الفاظ سے یہی سمجھتا ہوں کہ انہوں نے ان الفاظ کو نہیں پڑھا یا پڑھنے کے بعد سمجھے نہیں۔ واقعہ یہ ہے کہ اس گنجائش میں بہت بڑے اضافہ کی ضرورت اسلئے پیش آئی کہ گورنمنٹ نے اپنے پچھلے حکم کی رو سے اس میں بہت کمی کی تھی۔ اس کے بعد نان گرنٹیڈ ملازمین نے بہت بڑا احتجاج کیا اور اس احتجاج کی تائید اس ایوان کے بعض معزز اراکین نے بھی کی کہ ایکدم ہاؤز رنٹ الونس (House Rent Allowance) کم کر دیا گیا ہے، گورنمنٹ کو اس پر نظر ثانی کرنی چاہیے۔ چنانچہ بہت سے لوگوں کے کرایہ مکان میں جو کمی کی گئی تھی یا کرایہ مکان بند ہوا تھا ان کو دینے کا بعد میں تصفیہ ہوا اس تصفیہ کی وجہ سے یہ مددات یہاں پر پیش ہوئے ہیں جو ہاؤز رنٹ کے لئے ہیں۔

شری جی۔ سری راملو - الونس نہیں لکھا گیا۔

شری بی۔ رام کشن راؤ۔ ہے۔ صاف ہے۔ رستوریشن آف ہاؤز رنٹ الونس ٹو اسٹاف

(Restoration of house rent allowance to staff) اس کے معنی یہ ہیں۔ اگر آنریبل ممبر کو شبہ ہوتا تو وہ یہ پوچھ لیتے کہ اس کے کیا معنی ہوتے ہیں۔ جب وہ کٹ موشن پیش کر رہے ہیں تو یہ پوچھ لیتے کہ ہاؤز رنٹ الونس کے کیا معنی ہوتے ہیں۔ ہر ڈپارٹمنٹ میں فنانس ڈپارٹمنٹ۔ ہوم ڈپارٹمنٹ کامرس اینڈ انڈسٹریز ڈپارٹمنٹ اور لیگل ڈپارٹمنٹ میں جن ملازمین کا ہاؤز رنٹ الونس بند کیا گیا تھا ان کو پھر دینا پڑا۔ میں اس کی صراحت کر دینا چاہتا ہوں۔

دوسری چیز یہ ہے کہ اسی آنریبل ممبر نے کفایت شعاری کے بارے میں تلقین فرمائی ہے اور یہ کہنا ہے کہ کفایت شعاری کی ضرورت ہے۔ ڈپٹی منسٹرس کی طرف اشارہ کیا گیا اور کہا گیا ہے کہ گھر کے سنبھالنے میں ہی تکلیف ہے۔ یہ ظاہر ہے کہ جب تک خود اپنا گھر نہ سنبھالیں کوئی بات نہیں ہو سکتی۔ حکمران کو بھی اپنا گھر پہلے سنبھالنا پڑتا ہے لیکن ڈپٹی منسٹرس کے تعلق سے جو کہا گیا اس کا کفایت شعاری سے کوئی تعلق نہیں ہے۔ آنریبل منسٹرس کے لئے جو رقم گزشتہ سال منظور ہوئی تھی اس میں کچھ گھٹاؤ ہوا تھا تو اس سال یہ رقم بڑھائی گئی ہے۔ ۱۳ منسٹرس کے لئے جو اخراجات آپ نے منظور کئے تھے اس میں سے ۸ ڈپٹی منسٹرس کے اخراجات کو منہا کیا جائے تو کچھ بچت بچی سرکار ہوتی ہے۔ کفایت شعاری کی حد تک انتباہی جواب دینا کافی ہے۔ دوسری اور چیزوں کے تعلق سے بھی کفایت شعاری کا خیال رکھا گیا ہے اور جو زائد عہدے بتلائے گئے ہیں اور جنہیں ہم نے بھی محسوس کیا، ان کی تخفیف کی گئی ہے۔ میں مثالیں بتا سکتا ہوں۔ آرکیٹیکٹ آفس ہے اور ایک دو اور جگہ ہیں۔ وہاں بڑی جگہ بھی کم کی گئی ہے اور چھوٹی جگہ بھی کم کی گئی ہے۔

انسپیکٹر آف آفس (Inspector of offices) کے سلسلہ میں جو تنقید

کی گئی ہے میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر کو انسپیکٹر آف آفس کے فیکشنس کیا ہیں

انکا علم نہ ہونے کی وجہ سے کی گئی ہے۔ اس کی غرض یہ دیکھنا نہیں ہے کہ لوگ دفتر کو وقت پر آتے ہیں یا نہیں۔ چائے پیتے ہیں۔ ٹیبل پر پیر ڈالتے ہیں یا سو جاتے ہیں، بلکہ انسپکشن (Inspection) اس غرض سے کرتے ہیں کہ جو اسٹاف ہے وہ کافی ہے یا ناکافی ہے۔ زائد لوگ تو کام نہیں کر رہے ہیں۔ اس میں کس قدر تخفیف کی گنجائش ہے۔ کسی خاص دفتر کے طریقہ کار میں کیا نقص ہے۔ طریقہ کار میں تبدیلی کرنے کی وجہ سے ایفیشنس (Efficiency) میں زیادتی ہو سکتی ہے یا نہیں۔ اس قسم کا معائنہ کر کے جی۔ اے۔ ڈی کو رپورٹ کرتے ہیں۔ آیا بزنس (Business) کے طریقوں میں تبدیلی کریں یا لوگوں میں کمی کریں۔ اس قسم کے کام کے لئے انسپکٹر آف آفسس مقرر ہے۔ جب اس ہاؤز میں انسپکٹر آف آفسس سے متعلق سوالات کئے گئے تھے تو پچھلی مرتبہ میں نے بیان کیا تھا کہ ایفیشنس میں کتنی ترقی ہو سکتی ہے۔ کئی مرتبہ ان کے سجیشنس (Suggestions) پر ہم نے عملہ کی تقسیم کی ہے اگر کسی صیغہ میں زیادہ کام ہو تو وہاں لوگوں میں اضافہ کرنے یا مقررہ لوگوں ہی کو ری آرگنائز کرنے سے ہم کمر بڑی مدد ملی ہے اور انسپکٹر آف آفسس کے عہدے کو قائم رکھنے کی ضرورت گورنمنٹ بڑی شدت سے محسوس کرتی ہے اس لئے اس کو قائم رکھا گیا ہے۔ اور اس پر جو رقم خرچ کی جاتی ہے وہ رائیگاں نہیں جائیگی۔ میں اس کا یقین دلانا چاہتا ہوں۔

اب جمعہ کی نماز کے لئے وقت ملتا ہے۔ یہ چیزیں ایسی ہیں کہ کچھ حیدرآباد کی روایات میں داخل ہیں۔ بعض لوگ انکو اچھی روایات سمجھتے ہیں اور بعض لوگ انکو بری روایات سمجھتے ہیں۔ اس میں اختلاف رائے بھی ہو سکتا ہے۔ لیکن بات یہ ہے کہ جہاں تک میرا تجربہ ہے پچھلے زمانہ کے مقابلہ میں اب کم ہے۔ اس میں شک نہیں کہ دیڑھ یا دو گھنٹے تک نماز کے لئے لیتے ہیں لیکن یہ کوئی کلیہ نہیں ہے کہ جمعہ کے روز ہمارے عہدہ دار یا انکے ماتحتین دو بجے آتے ہیں۔ کہیں۔ کسی جگہ ایسا تجربہ آنریبل ممبر کو ہوا ہو تو اسکو مستثنیات میں سے سمجھنا چاہئے۔ میں یقین کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ وقت کی پابندی جہاں تک ممکن ہے کی جاتی ہے۔ یہ حکم دیا گیا ہے کہ آدھا گھنٹہ دیر سے آئیں تو دیر حاضری کا عمل کیا جائے۔ میں نے سکرٹریٹس (Secretariats) میں اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ دیر حاضری کا عمل ہوتا ہے۔ تو یہ چیز روز بروز رویہ تنزل ہے اور مجھے امید ہے کہ کچھ عرصے کے بعد جب زیادہ سختی پرق جائیگی، جیسی کہ آنریبل ممبر چاہتے ہیں تو وہ بھی دور ہو جائیگی۔

چیف سکرٹری کے بارے میں آنریبل ممبر نے اعتراض کیا کہ باہر کے آدمی ہیں۔ بالکل صحیح ہے۔ یہ سوچ سمجھ کر لائے گئے ہیں۔ ایک طرف تو لوگوں میں تساہل۔ جمعہ کی نماز کا پڑھنا یا وقت کا چرانا۔ ایک ہی زبان سے کہا گیا اور دوسری طرف کلکٹرس کانفرنس کا اشارہ دیکر بھی کہا گیا۔ کلکٹرس کانفرنس بلاتی ہے اور

سی اچھی باتیں انکو بتلائی گئیں۔ لیکن ہمارے یہاں کے لوکل عہدہ داروں کی نسبت تو انکی یہ رائے ہے کہ ایک کان سے سنکر دوسرے کان سے نکال دیتے ہیں۔ دن میں تین چار مرتبہ چائے پیتے ہیں۔ ٹیبل پر پیر ڈالکر لیٹتے ہیں اور دوسری طرف ایک ایفیشنٹ (Efficient) آدمی کو جو سخت آدمی ہے اور جو کڑا ڈسپلن (Discipline) رکھتا ہے۔ اسکے ڈسپلن کی وجہ سے وہ مقبول نہیں ہے اور اسکی نسبت ذرا برے خیالات ہیں تو اس اکیلے آدمی کو نکلنے کی بھی تلفین کی جاتی ہے۔ تو یہ ایک آدمی، کیونکہ باہر سے آیا ہے اسلئے باہر کی اور اندر کی بحث کی جاسکتی ہے۔ لیکن ہم نے یہ اصول رکھا ہے کہ جو مقامی عہدہ دار مل سکتے ہیں انکو لیا جائے۔ میں اس کلیہ سے بھی متفق نہیں ہوں کہ ہمارے مقامی عہدہ دار ناکارہ ہیں۔ پابندی نہیں کرتے۔ تساہل کرتے ہیں۔ بہت سے اچھے لوگ بھی ہیں میں اسکو کلیہ کی شکل دیکر کہنا مناسب نہیں سمجھتا۔ اب رہی بات باہر کے آدمیوں کی تو وہ لائے ہی جا ئینگے۔ جب بدلے ہوئے حالات کے تحت مقامی آدمی ذمہ دار عہدوں کے لئے قابل یا موزوں نہیں سمجھے جاسکتے تو پھر باہر سے لینے پر کوئی استناع نہ ہونا چاہئے۔ اور باہر سے مطلب یہ ہے کہ آئی۔ اے۔ ایس کے قیام کے بعد ہر جگہ سے عہدہ دار آسکتے ہیں۔ چنانچہ گورنمنٹ آف انڈیا اور دوسرے اسٹیٹس کی حکومتوں کا آج یہ رجحان ہے کہ جہاں تک ممکن ہو سکے ایک اسٹیٹ کے عہدہ دار دوسرے اسٹیٹس میں جا کر کام کریں۔ گورنمنٹ آف انڈیا نے ہم سے یہ کہا ہے کہ کچھ سنٹرل گورنمنٹ کے اور دوسرے اسٹیٹ گورنمنٹس کے جو آئی۔ اے۔ ایس عہدہ دار کام کرتے ہیں انکو یہاں لیں چنانچہ انٹیگریشن آف سروس (Integration of services) کے اصول کے مدنظر یہ کیا گیا ہے یہ اصول ہے کہ یہاں کے لوگ باہر جائیں اور باہر کے یہاں آئیں۔ اسلئے کوئی اصولی اختلاف نہ ہونا چاہئے اور میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر جنہوں نے تنقید کی وہ اس سے انکار نہیں کرسکتے کہ سروس کارری آرگنائزیشن کرنے اور پہلے کی نسبت زیادہ ڈسپلن قائم رکھنے میں چیف سکریٹری نے حکومت کی بڑی مدد کی ہے۔ ایسی صورت میں مجھے اسپر تنقید کرنے کی کوئی گنجائش معلوم نہیں ہوتی۔

تیسری چیز یہ ہے کہ اسی آنریبل ممبر نے یہ اعتراض کیا کہ درخواستیں دیجاتی ہیں اور رپریزنٹیشن (Representation) کیا جاتا ہے تو انکے کوئی جوابات نہیں ملتے جاتے۔ اگر ہاؤز ہر ایک منسٹر کے لئے دس دس ہزار روپیہ اسٹیشنری میں اضافہ کرتا ہے تو بشکل اکنا لیمٹ (Acknowledgement) جواب بھیج دیا جائیگا۔ اگر دس دس ہزار کی یہ اسٹیشنری دیتے ہیں تو میں اسکا بھی آپکو یقین دلاتا ہوں۔ ہر ایک منسٹر کے پاس روزانہ تقریباً ۱۰۰ درخواستیں آتی ہیں۔ ان اندر جو بیل درخواستوں کا جواب دینا ناممکن ہے اور اگر دیا بھی جائے تو اتنی اسٹیشنری اور ٹکٹ صرف کر کے جواب دینے سے کوئی فائدہ نہیں ہوگا کیونکہ ان پر منسٹر کے کوئی قطعی احکام نہیں ہوتے بلکہ کلکٹر متعلقہ یا ہیڈ آف دی ڈپارٹمنٹ

کو ”فارڈسپوزل“ (For disposal) ”فار انکوائری“ (For inquiry)
 ”فار رپورٹ“ (For report) ایسے آرڈرس دئے جاتے ہیں ۔

اب اصل بات یہ کہی گئی کہ تبادلہ کیا جانا ہے ۔ کہا گیا کہ ایک جگہ پر ۱ سال تک عہدہ داروں کو رکھا جاتا ہے اور دوسری جگہ دو تین دن میں تبادلہ ہو جاتا ہے ۔ وہ چندو لعل کا زمانہ تھا جب تبادلہ نہ ہوتا تھا ۔ البتہ جلد ہی تبادلہ ہونے کی بعض مثالیں میرے سامنے ہیں لیکن شاذ و نادر صورتوں میں ہی ایسا کیا جاتا ہے ۔ یہ ضرور ہے کہ یہ بری عادت ہماری حکومت کے عہدہ داروں میں ہی نہیں بلکہ ہر جگہ موجود ہے کہ اپنی ترقی اور تبادلہ کے لئے منسٹروں اور بالا دست عہدہ داروں کے پاس اور بعض مرتبہ اس ہاؤز کے آنریبل ممبرس کے پاس ترقی اور تبادلہ کے لئے کوشش کرتے ہیں ۔ میں نہیں کہتا کہ ہمیشہ آنریبل ممبرس کے پاس کوشش کرتے ہیں لیکن جہاں تک انکا تعلق ہے وہ لوگ ضرور اس امر کی کوشش کرتے ہیں کہ کسی آنریبل ممبر کے تھرو (Through) یا کسی اور شخص کے تھرو عہدہ داران بالا دسب اور منسٹروں تک پہنچ جائیں اور اپنے تبادلوں کے سلسلہ میں کوشش کریں ۔ یہ مرض ضرور ہے لیکن اس مرض کو حکومت کی جانب سے انکریج (Encourage) نہیں کیا جا رہا ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ہاؤز بھی اسے جانتا ہے ۔ جہاں تک اسکا تعلق ہے عوام کا جنرل کنڈکٹ (General conduct) بڑھ جائے ، اسکا معیار بڑھ جائے سے ہی یہ چیز کم ہو سکتی ہے ۔ تبادلہ کی حد تک ہم نے جو جنرل اصول قائم کئے ہیں وہ یہ ہیں کہ محض کسی کی شکایات پر تبادلہ نہیں کیا جاتا ۔ جیسا کہ آنریبل ممبر فار منتھنی نے فرمایا محض کسی شکایت کی بنا پر کسی عہدہ دار کا تبادلہ نہیں کیا جاسکتا ۔ اور خود جیسا کہ انہوں نے یہ فرمایا اگر ایسا کیا گیا تو یہ مرض ایک جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہوگا ۔ یہ صحیح اصول نہیں ہے ۔ ممکن ہے کہ بعض آنریبل ممبرس کی شکایت پر بعض عہدہ داروں کے تبادلے نہ ہوئے ہوں ۔ تجربہ تو یہ ہے کہ بعض وقت یہ شکایتیں بے اصول ہوا کرتی ہیں ۔ اور محض ایسی شکایتوں کی بنا پر تبادلے کرنے سے اڈمنسٹریشن کا موریل (Morale) گر جاتا ہے اور نقصان ہوتا ہے ۔ اس وجہ سے شکایتوں کی بنا پر تبادلہ نہیں ہوا کرتا ۔ بعض وقت ایسا ہوتا ہے کہ کسی جگہ کسی کا تبادلہ کیا جاتا ہے تو وہ تبادلہ اگر وہاں کی کسی پارٹی یا لوگوں کے خلاف پڑتا ہے تو پھر اس کی بھی ان کی جانب سے شکایت ہوتی ہے ۔ یہ چیزیں عام طور پر چل رہی ہیں ۔ حکومت غور کر رہی ہے کہ اس کو کس طرح گھٹایا جاسکتا ہے ۔ ہم چند اصول قائم کرنا چاہتے ہیں لیکن ہر اصول میں مستثنیات ہوا کرتے ہیں ۔ بعض وقت انتظامی ضروریات کے مد نظر ایک جگہ سے دوسری جگہ پر جلد جلد تبادلے کرنے کی ضرورت ہوتی ہے ۔ میں نے کلکٹرس کانفرنس میں اس کی ہدایت دی اور عام احکام جاری کئے ہیں کہ کسی مقام سے کسی شخص کا تبادلہ کیا جائے والا ہو تو کلکٹس سے استمراج کیا جائے ۔ اون کی رائے کے خلاف تبادلہ نہ کیا جائے ۔ بعض تبادلے اون کی رائے کے

خلاف دیتے ہیں تو اون کو شکایت رہتی ہے۔ ان چیزوں کی روک تھام کی جارہی ہے اور اون کو دور کرنے کے بارے میں میں ونسواس دلاسکناہوں۔ اس کٹ موشن کے سلسلہ میں نو سہا یہ جواب تھا۔ دوسرے کٹ موشن کے سلسلہ میں، میں مختصر طور پر عرض کروں گا۔ ایک آنریبل ممبر نے کفایت شعاری اور دوسری چیزوں کے بارے میں بیان کیا ہے۔ اون کا جواب دینے کی ضرورت نہیں ہے۔ حیدرآباد ہاؤز جو لندن میں ہے اس کو حکومت رکھنا نہیں چاہتی بلکہ اس کو فروخت کر کے رقم حاصل کر لینا چاہتی ہے۔ آج کل اوس میں ٹرنس آف برار اور اون کے لڑکے رہا کرتے ہیں۔ اور جہاں تک میں جانتا ہوں وہاں کے معمولی اخراجات اور اسٹبلشمنٹ چارجز (Establishment Charges) وہ خود برداشت کرتے ہیں وہاں دو عمارتیں تھیں ایک نو بیج دی گئی ہے اور دوسری کو بھی فروخت کرنے کی کارروائی قریب قریب مکمل ہو گئی ہے۔ ایک دو سہینوں میں اوس کے متعلق ٹرنس (Terms) تکمیل پا جائیں گے۔ اور پھر ان دو مکانات کے متعلق ہماری کوئی ذمہ داری نہیں رہیگی۔ اس سلسلہ میں دو ہزار کا جو سبلیمنٹری ڈیمانڈ کیا جا رہا ہے وہ ٹیکس کی ادائی کے سلسلہ میں ہے۔ یہ مد اوس وقت اس وجہ سے اومٹ (Omit) کیا گیا تھا کہ اوس کو بچنے کا ارادہ تھا۔ گڈنگز ہو چکی تھی لیکن ٹیکس ادا کرنا تھا۔ اب اس کے لئے موازنہ میں جو گنجائش مانگی جا رہی ہے وہ گزشتہ سال کے ٹیکس کے سلسلہ میں ہے۔

پبلک سروس کمیشن کے سلسلہ میں آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے جو تنقید کی ہے میں سمجھتا ہوں کہ وہ محض سنی سنائی باتوں پر مبنی ہے۔ انہوں نے یہ کہا کہ پبلک سروس کمیشن کی سفارشات کو نظر انداز کر کے حکومت کوئی بے اصولی کارروائی کرنا چاہتی ہے یا کر رہی ہے یا کرنے پر آمادہ ہے۔ میں نہیں جانتا کہ اون کے معلومات کے سروسس (Sources) کیا ہیں لیکن یہ یقین دلانا چاہتا ہوں کہ پبلک سروس کمیشن اور گورنمنٹ ان دونوں میں کوئی شدید اختلاف رائے نہیں ہے۔ صرف سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے پوسٹس کے بارے میں تھوڑا سا اختلاف موجود ہے۔ لیکن کسی اور ڈپارٹمنٹ میں تفرقات کے سلسلہ میں کوئی شدید اختلاف موجود نہیں ہے۔ چنانچہ پبلک سروس کمیشن کے متعلق گزشتہ جو رپورٹ ہاؤس کے سامنے پیش ہوئی اوس کے دیکھنے سے آنریبل ممبرس کو اطمینان ہوسکے گا۔ جہاں اون کی سفارشات کو حکومت قبول کر سکتی تھی قبول کیا گیا اور اون پر عمل بھی کیا گیا۔ ان خاص تین سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے بارے میں جو اطلاع آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن کو ملی ہے وہ غلط ہے۔ جن تین سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے بارے میں پبلک سروس کمیشن نے اپنی رائے دی تھی اون میں سے دو کے متعلق حکومت نے سفارشات کو قبول کر لیا۔ تیسرے کے بارے میں اختلاف رائے ہے۔ چنانچہ استفسار کا جواب دوبارہ بھیجا گیا ہے۔ وہ اسٹرائک کیس ہے۔ مجھے یقین ہے کہ پبلک سروس کمیشن حکومت کی رائے سے متفق ہو جائیگی۔ تیسرے سپرنٹنڈنگ انجینیر اوس کام کے ماہر نہیں ہیں، بلکہ وہ انجینئرنگ کے ایک دوہرے شعبہ کے ماہر ہیں اس لئے امید ہے کہ پبلک سروس

کمیشن حکومت کی رائے سے متفق ہو جائیگی اگر نہ ہوگی تو پھر پبلک سروس کمیشن اور حکومت کے مابین اختلافات کا تصفیہ کرنے کے لئے رولس کی رو سے جو طریقہ اختیار کیا جانا چاہیے اختیار کیا جائیگا۔ بجز اس کے کہ پبلک سروس کمیشن حکومت کے ریزن ایبل ریپریزنٹیشن (Reasonable Representation) کو ماننے سے انکار کرے پبلک سروس کمیشن کی رائے سے اتفاق کیا جاتا ہے۔ لیکن جہاں کوئی بہت بڑا نقصان ہوتا ہو یا ہونے کا امکان ہو یا حکومت کی کارکردگی پر اثر پڑتا ہو تو حکومت پبلک سروس کمیشن کی رائے سے اتفاق نہیں کر سکتی۔ میں آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن کو یقین دلانا چاہتا ہوں کہ حکومت پبلک سروس کمیشن کی رائے سے (۹۹ فیصد کیس میں اتفاق کرتی ہے۔ اس کے بارے میں کسی قسم کے شبہ کی ضرورت نہیں ہے۔

تیسری چیز لینڈ سنس کمیشن اسکیم کے بارے میں ہے، اس پر تبصرے کرتے ہوئے ایک آنریبل ممبر نے کریم نگر کا حوالہ دے کر کہا کہ وہاں ولیج آفیسر اور پٹیل پٹواریوں کا کرپشن جاری ہے۔ اس کی شکایت آنریبل ممبر نے میرے پاس تحریراً بھیجی تھی۔ پہلے جب شکایت وصول ہوئی تو کلکٹر کو انکوائری (Enquiry) کرنے کے لئے لکھا گیا تھا۔ دوسری بار جب شکایت وصول ہوئی کہ کلکٹر صاحب معلومات ہونے کے باوجود بھی ڈراسٹک اسٹپس (Drastic steps) نہیں لے رہے ہیں تو ریونیو بورڈ کے احکام کی بناء پر خود لینڈ سنس کے اسپیشل آفیسر کریم نگر کا دورہ کر کے معلومات حاصل کرنے والے ہیں۔ اون کی رپورٹ کی بناء پر کارروائی کی جائیگی اگر یہ معلوم ہو کہ وہاں پٹیل پٹواریوں کی جانب سے اس قسم کی باتیں ہو رہی ہیں تو حکومت ڈراسٹک اسٹپس لینے تیار ہے۔

لینڈ کمیشن اور لینڈ امپروومنٹ بورڈ کے نامینیشن اور الکشن کے بارے میں ایک آنریبل ممبر نے تبصرہ کیا ہے۔ وہ ایک ان کالڈ فار (Uncalled for) اور غیر ضروری تبصرہ تھا۔ واقعہ یہ ہے کہ ایکٹ کی رو سے تین ممبروں کو الکٹ کرنے کا اختیار اسمبلی کو دیا گیا ہے۔ اور جیسا کہ خود انہوں نے فرمایا پوری آزادی کے ساتھ اون کو الکٹ کیا گیا اور اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ خود انہوں نے اس پر اطمینان اور خوشی ظاہر کی۔ اپوزیشن نے اپنی طرف سے جو دو ممبرس بھیجے تھے وہ الکٹ ہوئے۔ جب اس پر تنقید کرنے کی ضرورت نہیں تھی بلکہ اس پر اظہار تشکر کیا جاتا تو مطلب تھا۔

لینڈ کمیشن کے سلسلہ میں نامینیشن ہوا ہے۔ آپ نے یہ کوشش کی کہ نامینیشن کا ادھیکار گورنمنٹ کو نہیں ہونا چاہئے بلکہ الکشن ہی ہونا چاہئے۔ نامینیشن کا گورنمنٹ کو جو ادھیکار ہے اس کی بناء پر گورنمنٹ نے اپنی سمجھ بوجھ سے تین چار آدمیوں کو نامینٹ کیا ہے۔ اس میں سے ایک تو آفیشل ممبر ہوں گے اور وہ ریونیو بورڈ کے ممبر ہوں گے۔ ان کا تعلق چونکہ لینڈ ریونیو سے ہے اس لئے اون ہی کو نامینٹ کیا گیا۔ باقی تین آنریبل ممبرس اس ہاؤس کے ہیں۔ جن کے بارے میں گورنمنٹ کو کم از کم یہ احساس تھا کہ وہ ان معاملات میں کافی دلچسپی رکھتے ہیں اور کافی معلومات بھی رکھتے ہیں۔ کافی

معلومات رکھنے کا نبوت انہوں نے اس سے قبل سلکٹ کمیٹی اور دوسرے مقامات پر دیا ہے۔ یہ حکومت کا ایقان ہے اور اس وجہ سے حکومت نے ان لوگوں کو نامینٹ کیا۔ جساکہ میں نے پہلے ہی کہا ہے اس میں اس قسم کی گنجائش تھی کہ حکومت چاہتی ہے اس ہاؤس کے باہر سے بھی لوگوں کو نامینٹ کر سکی تھی۔ لیکن خود ہاؤس نے اس سلسلہ میں ہر پریسیڈنٹ اور ایک نظیر قائم کردی اور حکومت نے بھی اوس کی تقلید کی۔ یعنی ہاؤس نے خود ہاؤس کے آئریبل ممبرس کا ہی انتخاب کیا اس لئے حکومت نے بھی اس کی تقلید کی۔ بدقسمتی سے اس ہاؤس کے آئریبل ممبرس نے باہر سے کسی دوسرے آدمی کو جن کر بھیجنے کی تکلیف گوارا نہیں فرمائی اور ہاؤس کے کسی آئریبل ممبر نے کسی باہر کے آدمی کا نام نامینیشن کے لئے پیش نہیں کیا۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:- महादेवसिंग साहेब को नामिनेट नहीं किया गया।

شری بی۔ رام کشن راؤ - وہ وتھ ڈرا (Withdraw) کر لیا گیا انہوں نے خود اپنا نام وتھ ڈرا کر لیا۔ اگر ہاؤس اون کو جن کر لاتا تو میں ویلکم (Welcome) کرتا۔ اگر میں اوس کے متعلق ناراض ہوتا تو پھر مجھ پر الزام لگایا جاسکتا تھا۔ چونکہ ہاؤس نے خود باہر کے آدمی کو نہیں چنا تھا اس لئے حکومت نے بھی اس کی تقلید کی۔ جو رجحان ہاؤس کا ہوتا ہے اوس کی تقلید حکومت کو کرنی پڑتی ہے۔ حکومت خود اپنے آپ کو اسٹرانک نہیں سمجھتی جب تک کہ ہاؤس کی تقلید نہ کرے جب ہاؤس کا رجحان یہ پایا گیا کہ وہ باہر کے لوگوں کا انتخاب پسند نہیں کرتا تو حکومت نے بھی نامینیشن (Nomination) کے سلسلہ میں اس کی تقلید کی۔ جن کے متعلق حکومت یہ سمجھتی تھی کہ وہ نامینٹ کئے جانے کے قابل ہیں اون کو چنا اور کمیٹی نے بھی اس چناؤ کو منظور کیا۔ اس وجہ سے اس امر پر مزید تبصرہ کرنے کی ضرورت معلوم نہیں ہوتی۔

لینڈ امپروومنٹ بورڈ (Land Improvement Board) کی حد تک میں یہ کہوں گا کہ جمہوریت کے تمام اصولوں کی پوری پوری پابندی کرتے ہوئے اس کے چناؤ اور نامینیشنس ہوں گے۔ اس کا میں وشواس دلانا چاہتا ہوں۔ جو چاہے اس کے لئے بطور کھڑا ہو سکتا ہے۔ جو شخص جسکو چاہے اپنا ووٹ دے سکتا ہے۔ جو پارٹی آسکتی ہے آئیگی۔ اور اس پر پورا پورا عمل کیا جائیگا۔ البتہ وہاں جو نامینیشن ہوں گے وہ متعلقہ محکموں کے آفیسرس کے ہوں گے۔ یعنی فارسٹ آفیسر۔ اگر ریکلچر ڈپارٹمنٹ کے آفیسرس وغیرہ۔ اس کے متعلق تو آپ کو زیادہ تنقید کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ تین ممبروں کو ہاؤس الیکٹ کریگا۔ اور اس کی پوری پوری آزادی رہے گی۔ میں سمجھتا ہوں کہ تمام اعتراضات کا میں نے جواب دیدیا ہے اس لئے امید کرتا ہوں کہ میرے ڈیمانڈس منظور کئے جائیں گے۔

Demand No. 8 — General Administration — Rs. 2,08,400.

Working of G.A.D.

Shri G. Sreeramulu: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Problem of Hyderabad House in London.

Shri Katta Ram Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Public Service Commission

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Land Census Scheme

Shri Ch. Venkatrama Rao : On the assurance of the Chief Minister, I do not wish to press my cut motion. I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Land Commission and Land Improvement Board

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1”.

The Motion was negatived.

Mr. Speaker : I shall now put the demand to vote.

The question is :

“That a further sum not exceeding Rs. 2,08,400 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh”.

The Motion was adopted.

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock, on Thursday, the 4th March, 1954.
